॥ श्रीः ॥

रूठी रानी।

एक ऐतिहासिक उपन्यास।

जोधपुरनिवासी

मुन्शी देवीप्रसादजी

रचित।

कलकत्ता।

९७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, "भारतमित्र" प्रेससे

पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९०६ ई०।

रूठी रानी।

उमादे भटानी।

सगाई।

हिन्दुस्थानमें बहुत रानियां हुई हैं जिन्होंने किसी न किसी बातमें प्रसिद्धि पाई है। रूठनेमें जो नाम उमादे भटानीने पाया वह किसी रानीने न पाया होगा। उसकी कहानी विचित्र है।

उमादे जैसलमेरके रावल लूनकरण* की बेटी थी। पौने चारसौ साल पहले उसके जन्म लेनेसे पृथिवी पर नये ढङ्गकी चुहलपहल मची थी। थोड़े दिनोंमें उसके सौन्दर्य्यकी धूम राजपूतानेमें मच गई। सखियां सोचती थीं कि देखें यह सुन्दरी किस भाग्यवानको मिलती है। वह उसके आगे राजाओंकी गुणावली सुनाती थीं और उसके जीकी थाह लेती थीं पर वह अपने रूपके घमण्डमें कुछ न सुनती थी। उसे केवल रूपहीका गुमान न था, दूसरे गुण भी रूपके सदृशही रखती थी। मनके साहस और हृदयकी उदारतामें भी कम न थी। स्वभाव संसारसे निराला था। छूईमूईकी तरह जरा किसीने उंगली दिखाई और वह कुम्हलाई। माता कहती थी, बेटी पराये घर जाना है यह स्वभाव कैसे निभेगा। पिता कहता था कि बेटी छोटी छोटी बातों पर रञ्ज न मानना चाहिये पर वह अपनी धुनमें किसीकी न सुनती थी सबका जवाब उसके पास चुप था।

धीरे धीरे कन्या विवाहके योग्य हुई। रानीने रावलसे कहा कि बेसुध क्या बैठे हो लड़की स्यानी हुई उसके लिये वर ढूंढो, उसके हाथ पीले करो।

---

*रावल लूनकरणजी संवत् १५८६ में गद्दी पर बैठे थे।

रावलने उत्तरमें कहा—जल्दी क्या है राजा लोगोंमें चर्चा हो रही है, सन्ध्या सवेरेमें कहीं न कहींसे विवाहका पत्र आता है। यदि अपनी तरफसे किसीके पास पत्र भेजा जायगा तो उसका मिजाज आसमान पर चढ़ेगा।

मारवाड़के राव मालदेव* राठौड़ने भी उमादेके रूपकी प्रशंसा सुनी। उन्होंने रावलसे कहला भेजा कि अपनी कन्या हमें दो। पुराने समयसे हमारे आपके सम्बन्ध चला आता है कुछ नई बात नहीं है।

रावलने यह समाचार पाकर जीमें कहा कि वाह, मेरा सारा देश तो नष्ट भ्रष्ट कर दिया अब बेटी भी मांगता है। फिर सोचा कि शेर स्वयं पिंजरेमें फंसता है ऐसा अवसर फिर न मिलेगा चूकना न चाहिये। घर बैठे शत्रुका शिकार होता है। यह सोच कर रावलने सोने चान्दीके नारियल† भेजे। राव मालदेवजी बरात सजाकर जैसलमेर आये। जेता और कूंपा उसके सूरमा सरदार सेना सहित दायें बायें चलते थे।

रावलने अपनी रानीसे जैसलमेरके किलेके झरोखेंसे दिखाकर कहा कि यह वही है जिसके भयसे न मुझे रातको नीन्द आती है और न तुझे कल पड़ती है। यह अब उसी द्वार पर तोरण¶

---

* राव मालदेव संवत् १५८८ में गद्दी पर बैठे।

† सगाईमें राजा लोग सोने चान्दीके मंढ़े हुए नारियल भेजते हैं।

¶ तोरण बान्धना—वर सुसरालके द्वार पर जाकर तोरणको छड़ी या तलवारसे छूता है। इसे तोरण छूना तोरण चटकाना या मारना कहते हैं। तोरण माने महराब। घरके द्वार प्रायः महराबदारही होते हैं इससे तोरण नाम द्वारका समझना चाहिये। पर विवाहके समय काठकी चिड़ियोंका एक गुलदस्ता बनाकर टांग देते हैं उसीको वर छूता है।

बांधेगा जो उसीके भयसे बहुधा बन्द रहता है। पर देख. मैं भी क्या करता हूं। यदि चौरी* मेंसे बचकर चला गया तो मुझे रावल मत कहना। बेटी तो विधवा होगी पर तेरी तरफका कांटा जन्मभरके लिये दिलसे निकल जायगा, बल्कि कुल राजपूतानेभरको कल पड़ जायगी।

रानी यह सुनकर रोने लगी। रावलने डांटकर कहा, चुप! रोयेगी तो बात फूट जायगी। फिर कुशल नहीं, यह हिंसक सबको खाजायगा। देख ब्याहने आया है पर सेना कितनी साथ लाया है। यह तो एक दिनमें घड़सोसर§ का सब पानी पी जायगी। हम तुम और सब नगरवासी प्यासे मर जायंगे। रानीको बेटीके विधवा होनेकी आशङ्कासे दुःख तो बहुत हुआ पर पतिकी बात मानकर वज्रकी छाती करके चुप होरही तथापि उसकी घबराहट छिपाई छिपती न थी।

बेटी माको घबराई देखकर समझ गई कि दालमें कुछ काला है, माको अधिक रोते देखकर उसने जान लिया कि आज रातको सोहाग और रंडापा साथ साथ मिलनेवाला है। जीमें बहुत तड़पी तलमलाई पर कलेजा मसूस कर रह गई। जीमें कहा कि बेटी बिन सींगोंकी गाय है जब मा बापही उस पर अत्याचार करें तो किससे कहा जाय और कौन सुने।

सखी सहेलियां फूली फूली फिरती थीं, राजभवनमें आनन्द फैला हुआ था। बाहर शादियाने बज रहे थे, उधर बरातमें भी ऐसीही तय्यारियां होरही थीं पर उमादेके जीका दुखड़ा कोई नहीं जानता था। सखियां उसे दुलहन बना रही हैं कोई उसके हाथ पांवमें मेहदी लगाती है कोई मोतियोंसे मांग भरती है कोई चोटीमें फूल गूंधती है कोई दर्पण दिखाकर कहती है वाह अच्छी बनी हो। पर बनीकी जान पर आबनी है, ज्यों ज्यों

* विवाह होनेकी जगह। § जैसलमेरके पास एक तालाब है।

दिन ढलता जाता है उसके चेहरेका रङ्ग उड़ता जाता है, सखियां औरही ध्यानमें हैं, यहां बातही और है।

उमादे अचानक सखियोंके झुरमटसे उठ गई और भारेली नाम की एक सुघड़ सहेलीको इशारेसे अलग बुलाकर कुछ बातें करने लगी।

भारेली रूप बदलकर चुपकेसे राघोजी जोशीके पास गई और पूछने लगी कि क्या आपने किसी कुमारीकन्याके विवाहका मुहूर्त्त निकाला है। उन्होंने कहा और किसीका तो नहीं रावलजीकी बाईके विवाहका मुहूर्त्त अवश्य निकाला है।

भारेली—क्या आप फेरोंके समय भी जायंगे?

जोशी—नहीं जाऊंगा तो मुहूर्त्तकी खबर कैसे पड़ेगी?

भारेली—क्या नगरमें और भी कहीं आप मुहूर्त्त बताते और विवाह कराते हैं?

जोशी—सारे नगरमें मैंही इन कामोंके लिये बुलाया जाता हूं।

भारेली—जोशीजी, यह मैं पूछती हूं कि आप जिन कन्याओं का विवाह कराते हैं वह कितनी घड़ियों तक सुहागन रहती हैं?

जोशी—(चमककर) हैं, यह तूने क्या कहा! क्या मुझसे दिल्लगी करती है?

भारेली—नहीं जोशीजी, दिल्लगी नहीं करती।

जोशी—तो फिर क्या कहती है?

भारेली—कुछ नहीं, एक बात पूछती हूं। मैंने आज एक गड़बड़की बात सुनी है।

जोशी—वह क्या?

भारेली—तुम अपने मुहूर्त्तको एक बार फिर जांच करलो तो कहूं।

जोशी पट्टी लेकर बैठा और अपने निकाले मुहूर्त्तको खूब जांच करके बोला—"मुहूर्त्तमें तो कुछ खोट नहीं है।"

भारेली—कर्ममें खोट है।

जोशी—नहीं मैंने जन्मपत्र देखकर मुहूर्त्त निकाला है, खोट कैसा?

भारेली—अजी कर्मपत्र भी देखा है? तुम्हारे मुहूर्त्त में तो बाईजीका कर्म फूटना लिखा है।

जोशी—तो क्या रावलजीने कुछ दगा बिचारी है?

भारेली—हां, राव मालदेवजी वैसे तो मारे नहीं जाते, चौरी में उन्हें मारडालनेकी सलाह हुई है।

जोशी—(उदास होकर) हरे हरे, राजाओंको धिक्कार है।

भारेली—जोशीजी इस दुःखको लो जानेदो, यदि कुछ उपाय हो तो करो।

जोशी—जब पिताहीको पुत्री पर दया नहीं तो मैं दीनब्राह्मण क्या कर सकता हूं।

भारेली—उपाय सब बातोंका होसकता है।

जोशी—तूही बता मैं क्या करूं।

भारेली—भले जोशी हुए, राजदरबारके जानेवाले होकर मुझ अबलासे पूछते हो कि क्या करूं!

जोशी—नहीं बाई, इसमें कुछ दोष नहीं। गुरु गुरु विद्या और सिर सिर बुद्धि।

भारेली—मेरी कही मानो तो इसी समय राव मालदेवजीके पास पहुंचकर उन्हें सावधान करदो।

जोशी—हां, यह ठीक है।

भारेली—तो क्या मैं जाकर बाईजीसे कहदूं?

जोशी—क्या तू भारेली है?

भारेली—जी हां।

जोशी—अच्छा मैं भी जाता हूं।

———

दिन ढल गया, बाजारोंमें छिड़काव होगया। लोग बरात देखनेके चावमें घरोंसे उमड़े चले आते हैं। जोशीने दरबारमें जाकर रावलसे कहा—सामेले (स्वागत) का मुहूर्त्त निकट है आप सवारीकी आज्ञा दें।

रावल—बहुत अच्छा, बरातवालोंको भी इसकी खबर करदो।

जोशी—हां, एक बात मुझे मारवाड़के ज्योतिषियोंसे पूछनी है।

रावल—वह क्या?

जोशी—जन्मपत्रसे तो नहीं, पर बोलते नामसे रावजीको आज चौथा चन्द्रमा और आठवां सूर्य्य है।

रावल—(जीमें प्रसन्न होकर) तो इससे क्या, मुहूर्त्त तो आपने जन्मपत्रहीसे निकाला है?

जोशी—महाराज, बोलते नामसे भी ग्रह देखे जाते हैं। चौथा चन्द्रमा और आठवां सूर्य्य घातक होता है। कोई ग्रह बारहवां नहीं है, नहीं तो——

रावल—(जीमें) क्या अच्छा होता जो कोई बारहवां ग्रह भी होता, जिससे पूरी विग्रही होजाती (प्रकाश्यमें बात काटकर) मारवाड़ बड़ा राज्य है, वहांके ज्योतिषियोंने देख लिया होगा। आप कुछ न कहें, उन्हें व्यर्थ आशङ्का होगी।

जोशी—नहीं, मैं आपका शुभचिन्तक हूं, मेरा धर्म्म है कि उनसे कहकर कुछ समाधान करादूं।

रावल—क्या समाधान?

जोशी—यही, दान दक्षिणादि।

रावल—तो दान अपनी तरफसे करा देना चाहिये उनसे कहने की क्या जरूरत है?

जोशी—नहीं, यह दान उन्हींकी तरफसे होना चाहिये, मैं सामग्री बता आऊंगा।

रावल—अपनी ओरसे होनेमें क्या कुछ हानि है?

जोशी—अपनी तरफसे तब दान कराया जाता जब बाईजीको कोई क्रूर ग्रह होता।

रावल—आज बाईको कैसे ग्रह हैं?

जोशी—बहुत बलवान हैं, पर स्त्रीका अच्छा बुरा अधिक उसके पतिके ग्रहोंसे सम्बन्ध रखता है। इसलिये बाईजीको भी वही ग्रह समझने चाहिये जो रावजीको हैं।

रावल—(फिर प्रसन्न होकर) तो अच्छा, जोशीजी बरातमें हो आइये। जल्दी आना यहां भी काम है!

जोशीजी—(चुटकी बजाकर) गया और आया।

रावलसे आज्ञा पाकर जोशी प्रसन्न मन वहांसे चला। राव मालदेवजीको खबर हुई कि जोशी राघोजी आते हैं। रावजीने कहा, उन्हें आदरसे लाओ वह बड़े ज्योतिषी हैं। वह क्या, उनके बेटे चंडूजी भी बड़े पण्डित हैं पञ्चांग बनाते हैं। चोबदार और ड्योढ़ीदार दौड़े जोशीजीको हाथोंहाथ लेआये। जोशी आशीर्वाद देकर बैठ गया। रावजीने कुशल पूछकर कहा—आपका पधारना कैसे हुआ?

जोशी—(इधर उधर देखकर) कुछ मुहूर्त्त बताना है!

यह सुन लोग हट गये और जोशी राव साहबसे दो बातें कह कर चल दिया। रावको बड़ी चिन्ता हुई, उन्होंने सरदारोंको बुलाकर सलाह की। जीता और कूंपा सरदारोंने कहा—आप कुछ चिन्ता न करें हम वहां इसका सब बन्दोबस्त कर लेंगे।

इतनेमें धौंसा बजा, कोलाहल होने लगा कि रावलजी आगये। तब रावजी भी सिर पर मौर माथे पर सेहरा बांधकर अपने डेरेसे निकले और घोड़ेकी पूजा करके सवार हुए। बरात चढ़ी कुछ दूर जाकर जाजम बिछ गई, गद्दी तकिये लग गये। रावल और

राव दोनो अपने अपने घोड़ेसे उतरे और गले मिले। फिर निशान का हाथी बढ़ा, दोनो साथ साथ किलेकी ओर चले। द्वार पर पहुंचकर रावलजी तो भीतर चले गये, रावजी तोरण बांधकर पीछे पहुंचे। राजभवनमें फिर दोनो मिलकर मसनद पर बैठ गये।

राजभवनमें विवाहकी तय्यारी होगई, नाज़िर रावजीको बुलाने आया। रावजीके साथ रावलजी भी उठे। उठते समय रावजीके सरदार कहने लगे कि आप हमें छोड़कर कहां जाते हैं। यह कहकर उन्होंने रावजीका हाथ पकड़कर बीचमें बिठा दिया। रावलजी उस समय रावजीका कुछ नहीं कर सकते थे उन्होंने उलटा अपनीही जानको जोखूंमें पाया। उनके सरदार भी अपनी सब सटपट भूल गये। रावजी बेखटके धीरे धीरे रनवासमें चले गये।

जनानी ड्योढ़ीसे उमादेकी मा सोढ़ी रानीने आरती करके रावजीके माथे पर दही लगाया* और जीमें कहा कि ऐसेही मेरा दिल ठण्डा रहे फिर नाक खेंचकर† अपना दुपट्टा उनके गलेमें डाल चौरीमें लेआई।

ब्राह्मण वेदमन्त्र उच्चारण करने लगे, अग्निमें आहुति पड़ने लगी, रावजीका हाथ उमादेके हाथसे जोड़ा गया, उमादे आगे हुई और रावजी पीछे चले। तीन बार अग्निके चारोंओर फिरे। तब स्त्रियां गाने लगीं—

पहले फेरे बाई काकारी भतीजी,
दूजे फेरे बाई मामारी भानजी,
तीजे फेरे बाई भूआरी भतीजी,

चौथे फेरेमें रावजी आगे होगये और उमादे उनके पीछे चलने

---

* जैसे बरकी माता उसे दूध पिलाती है, वैसेही सास उसके माथे पर दही लगाती है, अर्थात् उसे अपनी कन्याका बर मान लेती है। कहावत है कि दहीकी बात सही।

† यह भी एक रीति विवाह की है।

लगो। तब स्त्रियोंने यह पिछला अन्तरा गाकर अपना गीत पूरा किया—

चौथे फेरे बाई हुई रे पराई।¶

गीत सुनतेही माता और बहनोंका दिल भर आया आंखोंसे आंसू टपकने लगे कि अब उमादे पराई होगई। इस प्रकार यह विवाह वैशाख सुदी ३ संवत् १५९३ की रातको हुआ।

रङ्गमें भङ्ग।

विवाह होजानेके बाद कन्या अपने महलमें चलीगई। बड़ी बड़ी स्त्रियां इधर उधर खिसक गईं। बधूकी सहेलियां रावजीको महलकी ओर लेचलीं। राहमें एक जगह गाना होरहा था, कितनी सुन्दरियां मिलजुल कर गारही थीं। रावजी चलते चलते वहां फिसल पड़े उनके गाने और रूप रंगने रावजी पर जादू कर दिया। वहीं डटगये, खवासें दौड़ीं एकने चान्दनी दूसरीने सोजनी और तीसरीने मसनद लगादी, चौथीने तकिये लगादिये, पांच सातने मिलकर शामियाना खड़ा कर दिया। राव मालदेव लट्टू होकर वहीं बैठगये, दो खवासें दायें बायें मोरछल लेकर खड़ी होगईं दो चंवर हिलाने और पंखा झलने लगीं। गर्मियोंकी सुहानी रात थी, चान्दनी छिटकी हुई थी, ठण्ढी हवा चलरही थी, भीनी भीनी बू चारोंओर फैली हुई थी। रावजी उस परिस्तानमें इन्द्र बनकर

¶ गीतका मतलब यह है—पिता लड़कीकी सगाई करके और माता जमाईके सिर पर दही लगाकर लड़की उसे दे चुकती है तब वेद और शास्त्रकी विधिसे उसका विवाह होता है। उस समय उस पर चचा मामा और फूफीका अधिकार रह जाता है। चचा को कुछ आपत्ति हो तो पहले फेरे तक उसे प्रगट कर सकता है मामा दूसरे फेरे तक और फूफी तीसरे तक। चौथे फेरेमें कन्या पराई होजाती है फिर किसीका कुछ दावा नहीं चलता।

बैठगये। गायनें चुप थीं, सामने कुछ फासिले पर रूपवंती पातरें नाचनेको तैयार थीं।

कलालियोंमेंसे चन्द्रज्योति नामकी एक सुन्दरीने आगे बढ़कर रावजीको सलाम किया, और खोजनोंसे कुछ हटकर बैठरे, गानेवालियोंसे इशारा किया कि हां—"दारूड़ो दाखांरो।"

बस तबलेपर थाप पड़ी और सुरीली गानेवालियां ऊंचे और मीठे सुरोंसे गाने लगीं—

भरला ए! सुघड़कलालि—दारूड़ो दाखांरो
पीवनवालो लाखांरो।

चन्द्रज्योतिने पन्नेके हरे प्यालेमें लाल शराब भरकर हंसते हुए हाथ बढ़ाकर रावजीको भेट की। उन्होंने बड़े प्रेमसे लेकर पीली और प्याला अशरफियोंसे भर कर लौटा दिया। चन्द्रज्योतिने उठकर सलाम किया और अपने गलेका चन्द्रहार तोड़कर उसके मोती वार वार कर गानेवालियोंकी ओर फेंकने लगी। गायनें सोरठके सुरोंमें गाने लगीं—

(१) ब्रज देसां, चन्दन वनां, मेरु पहाड़ां मौड़।
गरुड़ खगां लंका गढ़ां, राजकुलां राठौड़॥
दारूड़ो दाखांरो—

चन्द्रज्योतिने फिर प्याला भरकर रावजीको दिया और गायनें गाने लगीं।

(२) दारू पीवो रण चढ़ो, राता राखो नैन
बैरी थारा जलमरे, सुख पावेला सैन,
दारूड़ो दाखांरो—

---

(१) इस दोहेमें राठौर घरानेकी प्रशंसा है—देशोंमें ब्रज, बनोंमें चन्दन पहाड़ोंमें मेरु पक्षियोंमें गरुड़ और किलोंमें लंका मौड़ अर्थात् ताज है वैसेही सब राजघरानोंमें राठौड़ घराना सब का ताज है।

(२) यह दोहा शराब पीनेका उत्साह दिलाता है, अर्थात्—

(३) दारू दिल्ली आगरो, दारू बीकानेर
दारू पीवो साहवा, सौ रुपयां री फेर,
दारूड़ो दाखांरो—

(४) सोरठ री दोहो भलो, कपड़ो भलो सपेत
नारी तो निबली भली, घोड़ो भली कुमैत,
दारूड़ो दाखांरो—

भरला ए! सुघड़ कलाल।

इस गाने बजाने और कलालियोंके लुभाने रिझानेने रावजीका दिल छीन लिया। उसपर नर्तकियोंके गाने और बजानेने और भी सितम ढाया। रावजी उनके हाव भावमें उलझ कर रानीको भूल गये।

उधर नववधू उमादे बैठी रावजीको प्रतीक्षा कर रही थी, कितनोही बान्दियां उनके बुलानेको गईं, पर रावजी उस जलसेको छोड़ कर उठनाही नहीं चाहते थे और रात कम रही जाती थी।

रानीने इस वार अपनी उस चपल सहेली भारलीसे कहा कि अब रावजीको लाना तेराही काम है। उसने कहा कि रावजी इस समय आपेमें नहीं हैं मुझे न भेजिये, पर उमादेने न माना, उसीको भेजा।

रानीके यहां भी महफिल सजी हुई थी, गायनें तैयार बैठी थीं, शराब और गजक तैयार थी, केवल रावजीके आनेकी देर

"शराब पिओ और लड़नेको चढ़ो, आंखें लाल रखो जिससे तुम्हारे शत्रु जल मरें और सेन अर्थात् मित्र प्रसन्न हों,

(३) यह दोहा शराबकी प्रशन्सामें है—शराबही दिल्ली आगरा है और शराबही बीकानेर है, हे साहब, शराब पीजिये इसका एक एक फेर (दौर) सौ सौ रुपयेका है।

(४) इस दोहेमें अच्छी अच्छी चीजें बताई हैं—सोरठका दोहा सफेद कपड़ा, सुकुमारी स्त्री और कुमैत घोड़ा अच्छा होता है।

थी। रानीने भारिलीके जानेसे रावजीको आया समझकर गाने-वालियोंको इशारा किया, वह ऊंचे सुरोंमें गाने लगीं।

महलां पधारो महाराज हो।
दारूरा मारू * महलां पधारो महाराजहो॥
कदरी जोऊं छूं सेजां बाटहो—दारूरा मारू०

उमादे यह ठीक अवसरका गीत सुनकर कुछ मुसकुराई और फिर उसने लजाकर नीची आंखें करलीं। गानेवालियोंने भाटी वंशकी प्रशन्सामें यह दोहा गाया।

§ मथुरा पूंगल प्राग मरु लाहोरी भटनेर।
देरावर गढ़ गंजनी नौमो जैसलमेर॥
महलां पधारो महाराज हो।

सहेलियोंने कुछ रुपये उमादे परसे वारकर गायनोंको दिये, और उन्होंने यह दूसरा गीत आरम्भ किया—

† रंग माणो म्हारा राव!
तारां छाई रात ढोला फूलां छाई सेज॥
गोरी छायी है रूप ढोला बेगा बेगा आव।
जी रंग माणो म्हारा राव।

इतनेमें एक खवासने आकर कहा कि वहां तो रावजी नशेमें चूर बैठे हैं और "दारूड़ो दाखांरो" गवाया जाता है। यह सुनकर गानेवालियोंने यहां भी वही गीत आरम्भ कर दिया पर अन्तरे पलट दिये—

---

* महाराज महलोंमें पधारो। हे मदिराके रसिया महलोंमें पधारो मैं बहुत देरसे सेजों पर तुम्हारी प्रतीक्षा कररही हूं।

§ मथुरा पुंगल प्रयाग मारवाड़ लाहोर भटनेर देरावर गजनी और जैसलमेर यह नौ देश भाटियोंके हैं।

† मेरे राव आनन्द कीजिये, रात तारोंसे सेज फूलोंसे और सुन्दरी रूपसे छाई हुई है, प्यारे जल्द आकर सुख लूटो।

* भर ला ए सुघड़ कलालि दारूड़ी दाखांरी।
सोनेरी भट्ठी करूं रूपेरी घड़नार
हाथ पियालो धन खड़ी पीवो राजकुमार।
दारूड़ी दाखांरो—

(१) आम फले परवारसों; मह फले पत खोय,
तिणरो रस साजन पिवे, लाज कठाथी होय,
दारूड़ी दाखांरो—

(२) गेलां गेलां भूलियां मैंला पड़ी पुकार,
आवणरी वेलां नहीं अलबेला राजकुमार,
दारूड़ी दाखांरो—

उधर चंचल भारिली छलबल करती हुई इस ढंगसे रावजीके पास पहुंची कि रावजी जवानी और शराब की मस्तीमें उसेही रानी समझ कर उसके साथ चलदिये। वह भी उन्हें अपने मकानकी ओर लेगई। रानी उमादे यह सुनकर सन्न होगई और उसकी गायनें गाने लगीं—

---

* हे सुघर कलाली अंगूरी शराब भरला, सोनेकी भट्ठी और चान्दीका भबका बनाऊं। धनी अपने हाथमें प्याला लिये खड़ी कहती है राजकुमार तुम पियो।

(१) यह मदिराकी निन्दामें है—आम पत्तोंके साथ फलता है और महुआ पत (पत्ते और इज्जत) खोकर, उसका रस साजन पीता है, फिर उसे लज्जा कैसे हो अर्थात् महुआ पत्ते खोकर नंगा होकर फलता है उसकी शराबमें लज्जा कहां। फूल फल आनेके समय महुएके पत्ते झड़जाते हैं और आम पत्तोंके झुरमुटमें फलता है इससे कैरी कुछ छिपी रहती है।

(२) महलोंमें पुकार पड़ी कि मतवाले गली गली भटकते फिर रहे हैं अलबेले राजकुमार को आनेका अवसर नहीं।

(१) भरला ए सुघड़ कलालि दारूड़ो दाखांरो,
पहलां तो छीकलाली म्हारा मारूजीरी भायली
अब छै आलीजारी घरनार,
दारूड़ो दाखांरो—

(२) बीजलियां माडेचियां ऊपर ,ले रलियां
परदेसांरा साजना पतीजे मिलियां।
दारूड़ो दाखांरो—

(३) लड़री लीनी ऊनने बांधी चरे कपास।
दासी दीनी दायजे पज गई पिडरे पास॥
दारूड़ो दाखांरो।

यह सुनकर उमादेको बड़ा दुःख हुआ। उसने गानेवालियों को चुप कर दिया। जो थाल आरतीके लिये उसने सजाया था और वह दीपकोंसे जगमगा रहा था उसने उसे औंधा दिया और पलंगपर जाकर पड़ रही। महलमें सन्नाटा होगया। उस समय जो विचार उसके जीमें उत्पन्न होते थे उसीका जी जानता था।

सवेरा हुआ रावजीका नशा उतरा। देखा रातको जिसे उन्होंने रानी समझा था वह पानीकी झारी और चिलमची लिये एक बड़े महलकी ओर जारही है। उन्हें अपनी भूलकी खबर हुई। उसी समय शरमाये हुए महलमें गये पर वहां जाकर यह दशा देखी कि कुछ करते न बना।—

(१) पहलेतो कलाली मेरे प्यारेकी आश्ना थी पर अब तो उस आलीजाहकी घरवाली होगई है।

(२) माड अर्थात् जैसलमेर देशमें जो बिजलियां चमकती हैं वह ऊपरही ऊपर चली जाती हैं ऐसे ही परदेशी सज्जन जब मिलें तब मन पतियाता है। जैसलमेरमें अनेक बार बारिशकी पूरी आशा होने परभी वर्षा नहीं होती।

(३) भेड़ ली तो थी ऊनके लिये पर अब वह बंधी हुई कपास चरती है! दासी दहेजमें दी गई थी वह पियासे हिलमिल गई।

मान गुमानन कामिनी ऊमादे बड़ भाग।
रूठी बैठी सेजमें मालदेव पियत्याग॥

वह रावजीको देखके उठी पर कुछ न बोली।—

भौंहा चाप चढ़ायने नैनारा सर जोड़।
कर मरोड़ पिव सौंखड़ी लड़ न मतै मुख मोड़॥

खवासें दूर दूर चुप खड़ी थीं, भारिलीका लङ्ग सूख रहा था, पर गायनें बन्द न हुईं, वह गाने लगीं,—

मधू छकिया महाराज
थाने किणी पियाई दारूड़ी॥

रावजीने नशेमें होनेका बहाना करके रानीको बहुत मनाया, पर वह न मानी। गानेवालियोंसे कहकर भी मनानेके बहुतसे गीत गवाये पर कुछ फल न हुआ। इस झमेलेमें बहुत दिन चढ़ गया। अन्तमें रावजी मनानेकी बात फिरपर छोड़ कर महलसे निकले, उसी समय उनके सरदार भी रावलजीके पाससे उठ गये।

रावजी फिर महलमें जाकर जोखोंमें पड़ना नहीं चाहते थे, बाहरहीसे बिदाके लिये कहलाने लगे। रावलजी भी यही चाहते थे कि भेद न खुले और बिदाई होजाय।

रानी उमादे रावजीके साथ जाने पर राजी नहीं होती थी। राघोजी जोशीने आकर कहा कि कल तुम्हे रावजीको जान प्यारी थी, क्या आज नहीं है? अब भी रावजीके प्राणका भय नहीं गया है, यह समय रूठनेका नहीं है।

यह सुनकर रानी नर्म हुई। हिन्दू राजाकी लड़की है और हिन्दू धर्मको मानती है जो स्त्रियोंको पतिपूजा सिखाता है। वह माताके पास गई, कुछ देर उससे और सखियोंसे बिछड़नेके लिये रोती रही और फिर दो घूंट पानी पीकर चुपचाप सुखपालमें बैठ गई।

रावजीके कहनेसे रानी उमादेने भारिलीको भी एक अलग रथमें बिठा लिया। राघोजी जोशी भी पहुंचानेके बहाने साथ होगये।

उनके बेटे वणूजी पहलेहीसे रावजीके लश्करमें पहुंच गये थे, क्योंकि इन दोनों को रावलजीकी ओरसे आशंका थी। रावलजी को यह सन्देह होगया था कि इन्होंने हमारा भेद जानकर रावजी को सावधान करदिया। अन्तमें बरात बिदा हुई और जोधपुर दिन दिन निकट होने लगा।

रानीकी हठ।

रानी उमादे अपनी हठ पर दृढ़ है। रावजीसे न बोलती है न उन्हें अपने पास बैठने देतीहै। रावजी आते हैं तो वह उन्हें ताजीम देकर अलग बैठ जाती है। रावजी उसके रूप और अवस्था पर मोहित होकर चाहते हैं कि कुछ न हो तो जरा यह हंसकर बोल ही ले। पर वह ऐसी पट्टी पढ़ीही न थी। इसी प्रकार वह भारेलीसे भी नहीं बोलतीथी। भारेली अपने मांमूली काम किये जाती थी और आंख बचाकर रावजीसे मिल लेती थी और राघोजीको साक्षी बनाकर रावजीसे कहती थी कि मैंने जहां तक बना आपकी भलाईकी है पर बाईजी मुझसे नाराज हैं, मेरी लज्जा आपके हाथ है। राघोजीने रावजीसे कहा, कि निस्सन्देह भारेलीके कारणही मैं आपकी एक सेवा कर सका और श्रीमान की शरणमें आगया, रावलजी मुझसे वैसेही अप्रसन्न हैं जैसे आपसे बाईजी।

रावजी जानते थे कि राघोजीनेही रावलजीके बुरे विचारोंका पता दिया और राघोजीको भारेलीने भेद दिया था, पर यह नहीं जानते थे कि भारेलीको कैसे पता लगा। इसका हाल तो जब मालूम होता कि रानी उमादे अपने मुंहसे कुछ कहती, वह भारेली और रावजीसे ऐसी बेजार थी कि मुंहसे कुछ बोलती ही न थी। वह यह जानती थी कि इस प्रकार रूठे रहना अच्छा नहीं, पर उसका दिल नहीं मानता था, इसलिये वह अपने मानमेंही भरी बैठी थी।

भारेली भी उमाकी चुपसे बड़ी भयभीत थी। एक दिन साहस करके वह उसके पैरों पर गिर पड़ी और गिड़गिड़ा कर कहने लगी, कि बाईजी आपका विचार जो हो सो हो पर मैंने तो उस समयभी आपकी भलाईहीकी है जब आपने मुझे रावजीके लानेको भेजा था। क्योंकि महलसे बाहर निकलतेही मुझे ऐसा सन्देह हुआ था कि कोई जनाना वेशमें रावजीको ताक रहा है, इसीलिये मैं उनको आपके महलमें लाना उचित न समझकर अपने घर लेगई। रावजी नशेमें थे पड़कर सोरहे और मैं रातभर कटार लिये उनकी रक्षा करती रही। जब वह जागे तो आपकी सेवामें हाजिर होगई, इसमें यदि कुछ मेरा दोष हो, तो क्षमा करें। उमादेने यह सब बातें सुन तो लीं, पर कुछ बोली नहीं। भारेली खिसियानी होकर चली गई।

बरात जोधपुर पहुंच गई। दीवान और प्रधान बड़ी धूम धाम से स्वागतको आये, कोसों तक सेना और तमाशाइयोंका तांता लग गया। किलेमें जनान खानेकी ओरसे गाजे बाजेके साथ बड़बेवड़ा अर्थात् फूल पत्तोंसे सजा जलसे भरा कलश आया। रावजी उसमें अशरफियां डालकर अन्दर चले गये। वहां उनकी माता देवड़ी पद्माजीने बेटे और बहू पर अशरफियां न्योछावर कीं। बेटे और बहूने उनके चरण छुए, भीतर जाकर देवी देवताओंकी पूजाकी गई और उमादे एक अच्छे महलमें उतारी गई।

रावजीके रानियां भी और थीं और उनके बाल बच्चे भीथे। पाटरानी अर्थात् प्रधान रानी कछवाही लाछल दे आम्बेरके राजा भीम की बेटी थी। रावजीका बड़ा बेटा राम उसीसे उत्पन्न हुआथा झाली रानी स्वरूप दे सब रानियोंमें रूपवती थी, पर उमादेके बराबर न थी रावजीके जीपर उसीने अधिक अधिकार जमारखा था। उमादे से रावजीके विवाहकी बात सुनकर उसे बड़ा खटका हुआ था, उसे भय हुआ कि रावजी उसीके वशीभूत होजायंगे पर जब उसने सुना कि वह पहलीही रातमें रूठगई और यहां आकर भी वही

हालत है तो उसकी जानमें जान आई।

मातासे बिदा होकर रावजी झाली रानी स्वरूपदेके महलमें गये। उसने बड़े हर्षसे दौड़कर रावजीके बारने लिये और गले का हार तोड़कर उनपरसे मोती न्योछावर किये। रावजी उमादे के मान और घमण्डसे बड़े दुःखित थे। झाली रानीके आदर सत्कारसे बहुत प्रसन्न हुए और उसे विवाहका सब हाल सुनाने लगे। स्वरूपदे रानीने कहा—"आज्ञा हो तो मैं भी एक दिन भट्टानीजीसे मिल आऊं।

रावजी—भट्टानी क्या है एक भाटा (पत्थर) है।

स्वरूपदे—(हंसकर) वाह, आपने भला आदर किया। भाटा क्यों है वह भट्टानी है।

रावजी—हां भट्टानी तो है पर भाटेकी बनी है, मानकी मूर्ति है।

स्वरूपदे—वाह आपको उसका मान भी न भाया!

रावजी—मानकी भी एक सीमा होती है।

स्वरूपदे—भला जो एक बड़े घरकी बेटी हो एक बड़े रावकी रानी हो नवयुवती और नई बहू हो, रूपवती हो, उसके घमण्ड की क्या सीमा होसकती है? मुझ जैसी गरीब घरकी कोई क्या घमण्ड करेगी?

रावजी—यह सब ठीक है, पर स्वभावकी बड़ी कड़ी है, तुम जाकर प्रसन्न न होगी।

स्वरूपदे—अच्छा तो है कि आप भी पधारें और हम सब साथ चलें।

रावजी (हंसकर)—ठीक है, तुम्हारे साथ चलकर अपमान करावें!

स्वरूपदे—वह क्या उसका बाप भी आपका अपमान नहीं कर सकता।

रावजी—स्त्री अपने पतिका बहुत कुछ अपमान कर सकती है,

यदि वह तुम्हारे सामने मेरी ओर ध्यान ही न दे तो मेरा अपमान हुआ कि नहीं ?

स्वरूपदे—जब आप इतनी सी बातमें अपमान समझेंगे तो उसका मान कैसे निबहेगा ?

रावजी—हां यही देखना है।

उमादे और उसकी सौतें।

स्वरूपदेने सब रानियोंसे कहला दिया। दूसरे दिन सब रानियां बन ठनकर उमादेसे मिलने गईं। उमादेने उठकर लाछलदेको सबसे ऊपर बिठाया और उसीसे अधिक बातचीत की। बाकी सब रानियोंसे साधारण रीतिसे मिली और बहुत कम बात चीत की। इसलिये वह बहुत कुढ़ीं और उसके रूपको देखकर तो सब जल गईं।

लौटनेपर लाछलदे तो अपने महलमें चली गई। बाकी रानियां स्वरूपदेके महलमें जमा होकर सलाह करने लगीं। उन्होंने निश्चय किया कि उमादे तो रावजीसे रूठी है, रावजीको भी उससे रुठा देना चाहिये जिससे वह उसके महलमें आना छोड़ दें। क्यों कि उसने कभी हंसकर यदि रावजीकी ओर देख लिया तो वह उसीके होजायंगे।

इतनेमें रावजी आगये। उन्होंने पूछा—कहो, भटाणीजी कैसी है ?

स्वरूपदे—महाराज बहुत अच्छी है, पर अल्हड़ बछेरी है।

रावजी—तब तो दुलत्तियां भी झाड़ती होगी ?

स्वरूपदे—हमें इससे क्या, जो पास जाय वह लात खाय।

राव—जिसे दुलत्तियां खानी होंगी वही पास जायगा।

स्वरूपदे—सौ बातकी एक बात तो यही है।

तब रावजीने फिर दूसरी रानियोंसे पूछा। सीसोदिनी रानी पार्वतीने कहा—महाराज वह बड़ी घमण्डन है, अपने बराबर हमें क्या वह साजीको भी नहीं समझती।

झालीरानी हीरांदे बोली—महाराज कुछ न पूछिये. अपने सिवा अह सबको पशु समझती है।

आहड़ी रानी लाछोयाईने कहा—मैं तो जाकर पछताई उसकी मा ऐसी अनगढ़ बेटी न जाने कहांसे लाई। उसकी आखोंमें न लाज है, न बातोंमें लोच है। मैं तो आपको उसके पास न जाने दूंगी।

सोगरी रानी लाडांने कहा—वह तो, मिजाजमें मरी जाती है. न आयेका आदर न गयेका मान, ऐसीके पास जाकर कोई क्या करे।

चौहान रानी बृंदा बोली—महाराज, मैंने स्वरूपवती भी देखीं लाडली भी देखीं पर उसका दमाग चला हुआ है। न जाने उसके गोरे शरीरमें कौन भूत घुस रहा है।

रानी राजबाईने कहा—गोरी चिट्टी है तो क्या, लक्षण तो दो कौड़ीकेभी नहीं। बड़ेघर आगई है नहीं तो सारा मान झड़जाता।

झाली रानी नौरंगदे बोली—जवानीके नशेमें दीवानी होरही है। यह नहीं जानती कि जवानी सबको चढ़ती है, अकेली उसे ही नहीं चढ़ी है। कल जवानी जाती रहेगी, सब बल निकल जायगा।

इन बातोंसे रावजीको भी क्रोध आगया। उन्होंने भी जाना कम कर दिया, कभी जाते तो उसके रूपको एक निगाह देखकर चले आते। उमा भी केवल ताजीमके लिये खड़ी होजाती और कुछ बात न करती।

रावजीकी दो भट्टानी रानियां और थीं। उनसे वह उमाकी बात कुछ न करते। क्योंकि जानते थे कि वह उमाकी निन्दा न

सुन सकेंगी। वह भी रावजीसे कुछ न कहतीं पर जीसे यही चाहती थीं कि रावजीका उमासे मेल होजाय। इससे मौका मिलने पर वह कछवाही रानी लाछलदेसे बोलीं कि उमादे लड़कपनके कारण अपनी हानि कर रही है, सौतोंके दाव पेचको नहीं जानती अबतो रावजी भी उसके पास कम जाते हैं। पर उसका स्वभाव अबतक न बदला। खैर वह तो नासमझ है पर रावजी समझदार होकर उससे क्यों रूठते हैं! लाछलदे बहुत भली रानी थी। उसने एक दिन अवसर पाकर रावजीसे कहा—अपनी नई लाडोके पास आना जाना क्यों कम कर दिया?

रावजी—मैं तो बराबर जाता था उसीने रूठकर काम खराब कर दिया।

लाछल—वह रूठी क्यों, इसका भेद मैं अबतक न जान सकी।

रावजी—भारिलीके कारण।

लाछल—फिर आप भारिलीको इतना क्यों मुंह लगाते हैं? उमाके बराबर वह नहीं है।

रावजी—मैं क्या करूं, उमाने ही उसको मेरे पास भेजा।

लाछल—ठीक है, पर भारिली भारिलीकी जगह रहे और उमा उमाकी जगह।

रावजी—मैं भी यही चाहता हूं, पर उमा नहीं चाहती। उसके जीका हालही नहीं मालूम नहीं होता कि वह क्या चाहती है, तुम जरा पता तो लगाओ।

लाछल—बहुत अच्छा, कोई अवसर आने दीजिये।

लाछलदेने यह सब बातें उमासे कहीं। उसने धन्यवाद किया। उमा कभी कभी लाछलसे मिलकर जी बहलाती थी और उसे जीजीबाई कहती थी। उसके पुत्र कुमार रामका भी बहुत लाड़ प्यार करती थी।

मनानेकी चेष्टा।

अगले वर्ष संवत् १५८४ में राव मालदेव दौरा करते हुए अजमेर गये। वहां कुछ दिन किलेमें रहे जिसमें पहले बीसलदेव और पृथ्वीराज जैसे प्रसिद्ध महाराजोंका सिंहासन बिछता था। रावजी उसे अपने अधिकारमें देखकर एक रात इतराकर अपनी चौहान रानियोंसे कहने लगे कि इसे भलीभांति देख लो यह तुम्हारे बड़ोंकी राजधानी है।

रानियोंने कहा कि हम तो आपके अधीन हैं, अपने बड़ोंकी होड़ नहीं कर सकतीं। वह जैसे थे उन्हें आपके बड़े भी जानतेही होंगे।

रावजी इस उत्तरसे पृथ्वीराज और संयोगिताकी घटनाका इशारा समझकर जीमें गुस्सा लेआये और झटपट जनानेसे बाहर निकल गये। उस समय काली काली घटाएं छाई हुई थीं, कुछ बूँदें भी पड़ रही थीं। रावजीकी आंखोंमें नशा दिलमें क्रोध और हाथमें खांडा था। आपने आवाज दी ड्योढ़ी पर कौन हाजिर है?

ईश्वरदास बारहटने आगे बढ़कर मुजरा किया और कहा—बड़ी खमा अन्नदाता, पृथ्वीनाथ पधारो, शुभचिन्तक हाजिर है।

रावजी—अभी आप जागते हैं? अच्छा कोई कहानी तो कहो।

ईश्वरदास—जो आज्ञा, विराजिये।

रावजी बैठ गये। ईश्वरदासने कहानी शुरू की। बीच कहानी में उसने यह दोहा पढ़ा—

> मारवाड़ नर नीपजे नारी जैसलमेर।
> तुरी तो सिन्धां सांतरां करहल बीकानेर॥

अर्थात् मारवाड़में मर्द, जैसलमेरमें स्त्रियां, सिन्धमें घोड़े और बीकानेरमें ऊंट अच्छे होते हैं।

रावजी—बारहटजी! निस्सन्देह जैसलमेरमें स्त्रियां अच्छी होती हैं, पर हमें तो वहांकी स्त्रियोंसे कुछ लहना नहीं।

ईश्वरदास—क्यों अन्नदाता! यह क्या आज्ञा करते हैं? जैसलमेरकी अच्छीसे अच्छी नारी उमादे—

रावजी—(बात काटकर) वह तो फेरोंकी रातसेही रूठी बैठी है।

ईश्वर०—आपसे नीज रूठे, चलिये अभी मेल कराद्रूं।

दोनो उमादेके महलकी ओर चले। रावजी चलते चलते रुककर ईश्वरदाससे बोले—बारहटजी, आप चलते तो हैं पर वह बोलेगी भी नहीं।

ईश्वर०—मैं चारण हूं। चारण मरेको बुला सकते हैं वह तो जीती हैं।

ड्योढ़ी पर पहुंचकर ईश्वरदासने रावजीको अपने पीछे बिठा लिया और उमादेसे कहलाया कि मैं रावजीके पाससे कुछ कहने आया हूं। उमादे परदेके पास आबैठी। ईश्वरदासने कहा—बाईजी मुजरा, बड़ी खमा।

उमादेने कुछ जवाब न दिया। ईश्वरदासने फिर कहा—बाईजी राजसे मेरा मुजरा।

इसका भी कुछ उत्तर न मिला। तब ईश्वरदाससे रावजीने धीरेसे कहा—मैं न कहता था कि वह न बोलेगी, मुर्दा बोले तो यह बोले।

ईश्वरदास—बाईजी! मैं भी आपहीके घराने(१)का हूं इसी लिये बाईजी बाईजी करता हूं। यदि ऐसा न होता तो तुम देखती कि कैसा तुम्हें और तुम्हारे घरानेको लजाता। यह क्या

---

(१) ईश्वरदास रोहड़िया जातिका चारण था, उसका पूर्वपुरुष मांगा भाटी था। रावजीके परदादा राव रायपालने बहुतसा धन देकर उसे अपना चारण बनाया था।

बात है कि मैं तो मुजरा मुजरा करता हूं और तुम उत्तर तक नहीं देतीं ?

उमादे इस पर भी चुपही रही।

ईश्वरदासने फिर कहा—बाईजी, आपने सुना होगा कि आप के बड़ोंमें एक रावल दूदाजी थे। वह मुसलमानोंसे लड़कर काम आये थे। उनकी रानीने चारण झूंपाजीसे कहा कि बाबाजी, रावलजीका सिर लादो तो मैं सती हूं। झूंपाजी रणस्थलमें गये वहां कटे सिरोंके ढेरमें रावलजीका सिर पहचाना नहीं जाता था। तब झूंपाने रावलजीकी प्रशंसा आरम्भ की जिसे सुनकर रावलजी का सिर हंस पड़ा। झूंपा उसे पहचानकर रानीके पास लेआया। इसके विषयमें अबतक यह दोहा प्रसिद्ध है—

चारण झूँपे सेवियो साहब दुर्जन सह।
बिरदातां सिर बोलियो गीतां दूहां गह॥

अर्थात् झूंपा चारणने अपने स्वामी दूदाकी सेवा की थी इससे दूदाका सिर अपनी प्रशंसा सुनकर बोला। यह बात गीतों और दोहोंमें प्रसिद्ध है। सो बाईजी, तुम भी उसी रावल दूदाजीके घरानेकी हो, वह मरकर बोला तुम जीती भी नहीं बोलतीं ? क्या बड़ोंका रक्त तुम्हारे शरीरमें नहीं दौड़ता ?

उमादे—(जोशमें आकर) बाबाजी, मैं भी यही देखना चाहती थी कि तुम्हारी वाणीमें कितना प्रभाव है। कहो, क्या कहते हो और क्यों आये हो ?

ईश्वरदास—तुम्हारा जन्म चन्द्रवंशमें हुआ है, तुम स्वयं भी चांदसी उजाली हो। तुम्हारी सौतें भी कहती हैं कि उमादे चांद मेंसे चीरकर निकाली गई है पर कुछ कालिमा लगी हुई है। वह कलौंस क्या है यही पूछने आया हूं।

उमा—उन्हींसे पूछो।

ईश्वर—वह तो साफ साफ कुछ नहीं कहतीं ; पर सुना है कि तुम रावजीसे रूठ रही हो इसीको वह कलौंस समझ रही हैं।

उमादे—यदि ऐसा है तो उनके लिये सुखकी बात है।

ईश्वर—तुम भी भली हो सोतोंको सुखी और पतिको दुःखी रखती हो।

उमा—रावजीको बीबी बांदीको पहचान नहीं।

ईश्वर—रानी रानी है और बांदी बांदी।

उमा—तुम इसके लिये बचन देसकते हो?

ईश्वर—हां।

उमा—अच्छा हाथ बढ़ाओ।

ईश्वरदासने रावजीका हाथ पकड़कर परदेमें कर दिया। उमा ने देखकर कहा—आह! यह तो वही कठोर हाथ है जिसने मेरे साथ हथलेवा बांधा था।

ईश्वर—तो और हाथ कहांसे आवे।

उमादे यह सुनकर भीतर चली गई और रावजी भी उठ गये पर बारहटजी वहीं बैठे रहे। रात बीत गई, दिन निकल आया; दोपहर दिन चढ़ गया पर बारहटजीका आसन वहीं जमा रहा। उमाने उनके लिये भोजनका थाल भेजा पर उन्होंने छुआ भी नहीं। कहा—बाईजीने मेरा जरा लिहाज न किया मुझे तो उनका बड़ा भरोसा था। इसीसे रावजीको साथ लाया था। अब मुझे यहां मरना है। क्या बाईजीने कभी चारणोंके चान्दी करनेकी बात नहीं सुनी? चारण यदि किसी झगड़ेमें पड़ते हैं और राजपूत उनकी बात नहीं मानते तो अपनी बात रखनेके लिये चांदी अर्थात् आत्म-हत्या कर लेते हैं। उमादेने कहा—क्या आप मुझ पर चान्दी करेंगे?

ईश्वर—अवश्य करूंगा नहीं तो रावजीको क्या मुंह दिखाऊंगा?

उमा—तो आपने मुझे वचन क्यों न दिया?

ईश्वर—वचन रानी राजाके झगड़ेमें कौन दे? बीचवालेका काम मेल करा देना है, सो मैं रावजीको लेही आया था।

उमा—उन्हें लानेसे क्या हुआ ?

ईश्वर—और कुछ तो नहीं, मेरे प्राण संकटमें पड़गये।

उमा—आप भोजन तो करें।

ईश्वर—अगले जन्ममें करूंगा।

इतनेमें भारिलीने आकर कहा—बारहटजी, बाईजीने भी भोजन नहीं किया।

ईश्वर—वह भोजन करें, उन्हें किसने रोका है ?

भारिली—भला कभी ऐसा हुआ है कि चरण तो थोड़ी पर भूखा बैठा हो और कोई राजपूत जाई भोजन करले !

ईश्वर—यदि बाईजी चारणोंका ऐसा आदर करती हैं तो उनकी बात क्यों नहीं मानतीं ?

भारिली—आप क्या कहते हैं ?

ईश्वर—मैं कहता हूं कि बाईजी रावजीसे मान छोड़दें।

उमा—रावजी भी कुछ करेंगे या नहीं ?

ईश्वर—जो तुम कहोगी सो करेंगे। हाथ जोड़नेको कहोगी हाथ जोड़ेंगे, पांव पड़नेको कहोगी पांव पड़ेंगे, जैसे मानोगी मनायेंगे। मैंने सब ठीक कर लिया है।

उमा—बाबाजी, आपने समझदार होकर यह क्या कहा ! अपने धर्म और कुलकी रीति से क्या ऐसा होसकता है ? रावजी मेरे स्वामी हैं मैं उनकी दासी हूं, भला मैं उनसे यह कह सकती हूँ कि वह ऐसा करें या वैसा करें। मैं तो रूठनेमें भी उनसे सब प्रकार प्रसन्न हूँ और वह भी मेरा पूरा पूरा आदर करते हैं। इसीसे मैं जीती हूँ, क्योंकि मैं मानको प्राणसे भी ज्यादा समझती हूं।

ईश्वर—धन्य बाईजी धन्य ! पतिव्रता स्त्रियोंका ऐसाही धर्म है।

उमा—बाबाजी यह धर्म अन्त तक निभ जाय तो धन्य कहना नहीं तो क्या धन्य।

ईश्वर—हां, तो फिर तुम अब क्या चाहती हो ?

उमा—कुछ नहीं ; तुम भोजन करो तो मैं भी करूं।

ईश्वर—तुम भोजन करो, मैं तो तब खाऊंगा कि जब तुम मेरा कहना करोगी।

उमा—कहो क्या कहना करूं।

ईश्वर—रावजीसे रूठना छोड़ दो।

उमा—मेरा तो जी नहीं चाहती कि जो बात मैंने स्वीकार करली उसे छोड़ दूं, यह एक दम मेरे स्वभावके विरुद्ध है, पर आप के अनुरोधसे लाचार हूं।

ईश्वर—ऐसा हो तो रावजी भी वही करेंगे जो तुम कहोगी।

उमा—मैं कुछ नहीं कहती रावजीकोसब बातोंका अधिकार है। पर हां, कोई बात स्वभाव विरुद्ध देखूंगी तो फिर अलग हो जाऊंगी।

ईश्वर—हां ठीक है; कहो तो रावजी को लेआऊं और तुम चलो तो सुखपाल और अर्दली मंगाऊं।

उमा—अभी नहीं रातको चलूंगी, आप भोजन करें।

ईश्वर—पहले मैं रावजीसे मिल आऊं।

बारहट ईश्वरदास रावजीके पास चला गया और उमादेने फिर से भोजन बनवाकर उसके डेरे पर भेज दिया।

फिर मान।

रावजी प्रसन्न हैं रात होने की घड़ियां गिन रहे हैं। राजभवन सज रहा है, सन्ध्याहोसे सभा लगती है, गायनें और पातरं एकत्रहो जाती हैं नाचगाना आरम्भ होता है, शराब चलती है। उमादेको बुलाने बांदी पर बांदी आती है, रानी उमादे अभी शृंगारहो कर रही है। मांगमें मोती भरे जारहे हैं, जी अब भी रावजीकी ओर नहीं है, मान अलग मचल रहा है स्वभावने

हठ नहीं छोड़ा है, जाने न जानेका अभी निश्चय तक नहीं हुआ, इतनेमें फिर बुलावा आया। उमा फिर उखड़ गई। भारलीसे बोली, जाकर कह दे आते आते आवेंगे ऐसी जल्दी क्या है? भारली सुनकर सहम गई, कांप कर कहने लगी—बाईजीराज! क्या अन्धेर करती हो, मुझे क्यों भेजती हो, क्या और लौंडियां नहीं हैं? उमादेने कहा, तुझसी एक नहीं, तू यह उत्तर देकर जल्द चली आ फिर मेरे साथ चलना।

भारली लाचार गई। रावजीकी दृष्टि ज्योंही उसपर पड़ी वह रानीको भूल गये, उसे हाथ पकड़कर बिठा लिया। वह बहुत कहती रही कि जो मैं कहने आई हूं वह सुनिये और मुझे जाने दीजिये नहीं तो रंगमें भंग पड़ जायगी। रावजी बोले, कुछ नहीं होगा, भट्टानीने तुझे मेरी दिल्लगीके लियेही भेजा है वह आवे जब तक यहीं रह, फिर चली जाना। रावजी शराबकी धुनमें न उसकी कुछ सुनते हैं और न उसे जाने देते हैं, यहां, तक कि पातरों और गायनोंको भी वहांसे हटा देते हैं। कुछ देर पीछे रानी उमादे वहां पहुंची। देखा, रावजी भारलीको लिये बैठे हैं, उसी दमसे लौट गई। जीमें कहा अच्छा हुआ, मैं भी चाहती थी कि मेरा मान बना रहे।

उधर भारली रानीको देखकर घबराकर उठी और झरोखेसे नीचे कूद पड़ी। बाघा कोटड़िया पहरे पर था, गहनोंकी झंकार सुनकर उसने ऊपरको देखा और भारलीको गिरते गिरते ऊपर ही रोक लिया। उससे पूछने लगा, तू कौन है, परिस्तानकी परी है या इन्द्रके अखाड़ेकी अप्सरा? भारली बोली, चुप, अभी यहांसे मुझे निकालले चल, नहीं तो तेरी और मेरी जानोंकी खैर नहीं! बाघाने कहा, मैं रावजीका नोकर हूं, बिना आज्ञा कैसे जासकता हूं? पहरा पूरा करलूं तब जो कहोगी सो करूंगा। भारली बोली, खैर तू मुझे अपने डेरेपर छोड़ आ, फिर जैसा होगा देखा जायगा। बाघाका डेरा

ईश्वरदासके पासही था, भारेलीको देखतेही उसने पहचान लिया। झट रावजीके पास गया, वहं चकित बैठे थे, ईश्वरदासको देखकर बहुत उदास होकर बोले—मेरे हाथोंसे तो दोनोंही तोते उड़गये।

ईश्वर—एक तो उड़ जानेकेही योग्य था, उसकी चिन्ता न करें, बाघा कोटड़ियासे कहिये कि, उसे जैसलमेर छोड़ आवे, नहीं तो दूसरा तोता आपके हाथ न आयगा।

रावजी—अच्छा यदि आपकी यही इच्छा है तो बाघासे कहदो।

ईश्वरदासने उसी समय जाकर भारेलीको एक वेगवती सांडनी पर चढ़ाकर बाघाकी रक्षामें जैसलमेरको भेज दिया और वापस आकर रावजीको खबर दी।

रावजी तब बोले—अब तो भट्टानी राजी होगी।

ईश्वर—यह मैं नहीं कह सकता क्योंकि आप उनका मिजाज जानते हैं।

रावजी—हां इसीलिये तो मैं उसके पास गया नहीं; आप जाकर देखिये अगर होसके तो मना लाइये।

ईश्वर—अब उनका आना कठिन है है पर मैं जाता हूं।

ईश्वरदासने जाकर देखा कि राजभवन सूना पड़ा है और रानी बुर्जमें जाबैठी हैं। सखियोंने सफेद चान्दनी तान कर परदा कर दिया है। लौंडियां बांदियां पहरे पर हैं। उड़दा बेगणे (१) नंगी तलवारें लिये खड़ी हैं। ईश्वरदासने निकट जानेका साहस न किया, दूरसे देखकर रावजीके पास लौट गया और उनसे सब हाल कहा।

रावजी—(बिगड़कर) क्या भट्टानी बुर्जमें आ बैठी! यह क्या किया?

ईश्वर—बुर्जका भाग्य खुलनेवाला था। आज उस पर वह तेज बरस रहा है जो वहां कभी पृथ्वीराज चौहानके राज्य सिंहासन पर भी न बरसा होगा। चान्दनीका परदा पड़ा है, नंगी तलवारें

(१) उर्दू बेगमें अर्थात सिपाही स्त्रियां।

का पहरा है, मेरी तो वहांतक जानेकी भी हिम्मत न हुई अधिक क्या कहूँ।

रावजी—नंगी तलवारोंका पहरा है!

ईश्वर—हां महाराज; विश्वास न हो तो चलकर देख लीजिये।

रावजी—तब तो उसे मनाना कठिन है।

ईश्वर—बहुतही कठिन; रानीने मुझसे शर्त करली थी। आप ने अंधेर किया जो उनके स्वभावके विरुद्ध बात की, मेरे लिये भी कहने सुननेकी जगह न रखी।

रावजी—होनहार टलती नहीं। मैं भी अब बहुत पछताता हूं। पहले भी भारेलीके लियेही बिगाड़ हुआ था।

ईश्वर—वह तो गई, पाप कटा।

रावजी—इसका भी मुझे दुःखही रहेगा—

ईश्वर—(बात काटकर) अभी तो बाईजी दो चार दिन तक महलमें आती नहीं जान पड़तीं। उनके लिये क्या किया जाय?

रावजी—मैं तो कल चला जाऊंगा, मुझे बीकानेर पर चढ़ाई करना है, यहांका प्रवन्ध सब होचुका है। हुमायूं बादशाहके आने की खबर थी वह भी नहीं आया। फिर क्यों समय नष्ट किया जाय। तुम यहां रहो और इस बुर्जके पास कनातें खड़ी करवाकर पहरे चौकीका प्रवन्ध करो। जब उसका मिजाज ठीक हो तो समझा बुझाकर जोधपुर ले आना, मैं किलेदारसे कह दूंगा वही सब प्रवन्ध कर देगा।

रावजी यह कहकर अगले दिन अजमेरसे चल दिये। दीवान उनकी आज्ञासे अजमेरका रामसर परगना रानी उमादेकी जागीर में लिखकर पट्टा उसके पास भेज देता है। किलेदार उसकी ड्योढ़ी पर परदे और तम्बूका प्रवन्ध करके संध्या सवेरे सलामको हाजिर होता है। अजमेरका हाकिम नित्य रानीकी ड्योढ़ी पर मुजरेको हाजिर होता है और बड़े बड़े काम रानीकी सलाहसे पूरे करता है। उमादेका नाम अब 'रूठीरानी' प्रसिद्ध होजाता है। वह बुर्ज भी

रूठी रानीका बुर्ज(१) कहलाने लगा जो आजतक उसी नामसे प्रसिद्ध है।

जोधपुर पहुंचकर राव मालदेवने सुना कि बंगालमें हुमायूँ और शेरशाह सूरसे लड़ाई छिड़ गई और दिल्ली आगरा खाली पड़ा है। उन्होंने बीकानेरका खयाल छोड़कर पूरबकी ओर चढ़ाई की और हिन्दौन, बियाना तक फतह करते चले गये। वहांसे लौटकर संवत् १५९८ में बीकानेर भी जीत लिया।

इस बीचमें शेरशाह हुमायूँको सिन्धमें भगाकर आगरे पहुंचा। इधरसे वह सब राजा रईस और ठाकुर जिनके इलाके राव मालदेव ने लेलिये थे बीकानेरवालोंकी सरपरस्तीमें उसके पास गये और उसे रावजी पर चढ़ा लानेकी चेष्टा करने लगे। रावजीने उससे लड़नेको ८० हजार सवार जमा किये और बारहट ईसरदासको लिखा कि आप रूठीरानीको लेकर चले आइये और अजमेरके किलेमें जरूरी बन्दोबस्त करा दीजिये।

रूठी रानीने इस पर कहा—मुझे क्या डर पड़ा है। मैं राजपूतकी बेटी हूँ, किले पर कोई चढ़ आवेगा तो मैं करमेती झाड़ी॰ की भांति आगमें जलकर नहीं मरूंगी, मर्दों की भांति लड़ूंगी। रावजीको लिख दो कि यह किला मेरे भरोसे पर छोड़ दें और बाकी राज्यका स्वयं प्रबन्ध करें।

रावजीने उत्तर दिया कि अजमेरमें तो हम शेरशाहसे लड़ेंगे। रानीको राजपूती दिखानेकी यदि ऐसीही इच्छा है तो जोधपुरका

---

(१) यह बुर्ज अजमेरके किलेमें दक्षिणकी ओर है।

॰ करमेती झाड़ी महाराणा सांगाकी रानी और विक्रमादित्य तथा उदयसिंहकी माता थी। जब गुजरातके बादशाह सुलतान बहादुरने संवत् १५८९ में चित्तौड़का किला जीता तो करमेती १३ हजार स्त्रियोंके साथ अपनी इज्जत बचानेके लिये चिता बना कर जल मरी।

किला हम उसे सौंपकर चले जायंगे, तुम उसे जल्द लेआओ। बारहटने रानीसे कहा—बाईजी! महाराजने आपकी बात स्वीकार की है, पर अजमेरके बदले जोधपुरका किला आपको सौंपा जायगा आप वहां चलिये, यह अपना घर है। अजमेर तो पराया है, कुछ ही दिनसे रावजीके हाथ आया है।

रानी—अच्छा, अजमेर न, सही जोधपुरही सही, सवारीका प्रबन्ध करो, यदि यह अवसर न आजाता तो मैं यहांसे चलना नहीं चाहती थी।

सौतोंकी कुचेष्टा।

बारहटने हाकिम और किलेदारसे तैयारी करनेको कहा। इतनेमें जोधपुरसे स्वरूपदे झाली आदि रानियोंने एक बड़ी रिश्वत बारहटजीके पास भेजकर कहलाया, जैसे हो इसबलाको वहीं रहने दो। अजमेर छोड़तेसमय भी आपसे यही बात कहीथी और अबतक आपने उस बातका ध्यान भी रखा यहां तक कि रावजीके कहने पर भी उसे नहीं लाये, अब भी तुम जैसे चाहो उसे रोको और रावजीको समझाओ। बारहटजी रिश्वत पाकर निन्नानवेके फेरमें पड़ गये। पहले तो तैयारीको बहुत ताकीद करते थे अब चुप होगये और तैयारी ढीली पड़गई।

एक और नया गुल खिला। हुमायूंने जो शेर शाहसे हारकर सिन्धको गया था, रावजीकी लड़ाईकी तैयारी सुनकर एक वकील भेजा और कहलाया कि तुम अकेले शेरशाहसे न लड़ना, मैं भी आता हूं साथ चलना, दोनों मिल कर उसे हरायेंगे और मैं इस सहायताके बदलेमें गुजरात तुम्हें फतेह करादूंगा। रावजीने यह बात मानली और बादशाहको लिखा कि जैसलमेर होकर आओ वहां वाले हमारे सम्बन्धी हैं, आपका साथ देंगे। उधर ईश्वरदास

को लिखा कि रानीको लेकर जल्द आओ। हम तुम्हें कुछ जरूरी कामोंके लिये रावलजीके पास जैसलमेर भेजेंगे। वहांसे हुमायुं बादशाहको सहायता देकर फिर दिल्लीके तख्त पर बिठा देंगे।

बारहटजीने इन बातोंमें अपना अधिक लाभ देखकर हाकिम और किलेदारोंसे सवारीका प्रबन्ध करा लिया और रूठीरानीको जोधपुर रवाना कर दिया। दूसरी रानियां यह सुनकर बहुत घबराईं कि लो विपद आगई रावजी उसे किला सौंप कर बादशाहसे लड़ने जायंगे, या तो वह अनबन और या अब यह मेल! नारी क्या है जादूकी पुड़िया है ६० कोस दूर बैठी भी चुप नहीं। वह मन्त्र मारा कि जिसका उताराही नहीं, बारहट ईश्वरदास भी अपनी ओर होकर उधर होगया।

एक बडारन (खवास) ने रानियोंकी यह बात सुनकर कहा कि ईश्वरदासका काका बारहट आसाजी तो यहां मौजूद है, उससे काम लो। झालीरानीने उसी खवासको आसाजीके पास भेजा और कहलाया कि तुम्हारा भतीजा बड़ा अन्याय करता है जो दूर बठी हुई भटानीको यहां लेकर आता है और हमारे घरमें घोड़ा घालता(१) है। आसाने कहा कि वह कुपूत तो मेरे कहनेमें नहीं और जो कहो सो करूं। रानीने कहा कि भटानी यहां न आने पावे। आसाने कहा ऐसाही होगा, नहीं आवेगी। रानीने कहा, न कैसे आवेगी, वह तो चल पड़ी है, कल या परसोंही आ पहुंचती है। बारहटने कहा, मैं उसे राहमें ही रोक दूंगा। रानियोंने उसे बहुत कुछ धन दिया और वह रावजीसे यह बहाना करके कि अपने घर जाता हूं अजमेरको चल दिया। जब जोधपुर से १५ कोस पूर्व कोसाना गांवके पास पहुंचा तो उसे दूरसे निशान का हाथी दिखाई दिया और नक्कारेकी आवाज सुनाई दी। उसने जान लिया कि रूठी रानीकी सवारी आगई। सवारीका तांता

(१) घरमें घोड़ा घालनेका अर्थ झगड़ा उठाना है।

दूर तक लगा था, हाथीके पीछे ऊंटोंका नौबतखाना था, उसके पीछे घोड़ों पर नक्कारा बजता था। पीछे सजे हुए ऊंट और फिर चीलोंका झण्डा(१) हवामें उड़ता दिखाई दिया। झण्डेके पीछे रणबंका वदछेत राठौड़ोंका एक रिसाला था फिर एक कतार बन्दूकचियोंकी, उनके पीछे तीरन्दाज, फिर ढाल तलवारवाले राजपूत थे। आगे कुछ दूर मैदान खाली रखकर कोतल हाथी और घोड़े चलते थे। उनके पीछे नकीब चोबदार सोने चान्दीके असे लिये हुए सवस्थ करते चलते थे। बारहट ईश्वरदास भी पांचों हथियार लगाये एक चालाक घोड़े पर अकड़े बैठे थे। ज्योंही उसकी दृष्टि अपने चचा आसाजी पर पड़ी, घोड़ेसे उतरकर मुजरा किया और पूछा, आप यहां कहां? आसाजी बोले, बाईजीकी पेशवाईको आया हूं। दोनो वहीं खड़े होकर बातें करने लगे, सवारी बढ़ती चली गई।

फिर एक झुण्ड सजी सजाई और कमी कसाई स्त्रियोंका आया। उनमें कुछके पास तीरकमान और तलवारें भी थीं। उन्हींके झुर्मुट में रानीका सुनहरी सुखपाल था। उस पर जरीका गहरा गुलाबी पर्दा पड़ा और जगह जगह गहरे और चमकीले रंगके नग जड़े थे जिन पर निगाह नहीं ठहरती थी। सुखपालके पीछे नंगी तलवारोंका पहरा था। फिर कई जनानी सवारियां पालकियों, पिनिसों और रथोंमें थीं। उनके पीछे राठौड़ोंका एक एक रिसाला और रिसालेके पीछे जुलूसके शेष कोतल घोड़े हाथी और ऊंट थे। सबके पीछे फर्राश खाना तोशाखाना और मोदी आदि लावलश्करकी ऊंट गाड़ियां थीं।

आसाजीके साथी कहते थे कि देखें आसाजी कैसे इस धूमधड़क्केसे चलती हुई शाहाना सवारीको रोक देंगे, जिसके आगे कोई चूं नहीं कर सकता। इतनेमें रूठीरानी

(१) जोधपुरके झण्डेमें चीलोंकी तस्वीर होती है। यह राठौड़ोंका खास निशान है।

का सुखपाल आसाजीके बराबर पहुंचा। उसने बड़े अदबसे ड्योढ़ीदारको आवाज देकर कहा, बाईजीसे अर्ज करो कि आसा बारहट मुजरा करता है और कुछ विनय भी किया चाहता है और साथही यह दोहा पढ़ा—

मान रखे तो पीवतज, पीव रखे तजमान।
दोय गयन्द न बन्धियै, एकण खम्भू ठान॥

अर्थात् मान रखती है तो पति छोड़ और पतिको रखना चाहती है तो मान छोड़, क्योंकि एकही थानमें दो हाथी नहीं बान्धे जाते।

दोहा सुनतेही रूठीरानी फिर सनक उठी, और उसका दिल उसके वशमें न रहा, उसी दम सवारी लौटानेकी आज्ञा दी। सब चकित रहगये कि यह क्या हुआ, ईश्वरदासने बहुत जोर मारा, हाथ जोड़े पर आसाजीके जादू भरे शब्दोंके सामने उसकी कुछ पेश न गई। रानीने किसीकी बात न सुनी कोसाना गांवमें डेरे करा दिये। आसा उसे और पक्का करनेको ड्योढ़ी पर पहुंचा और मुजरा करके कहा—बाईजी, धन्य हो, मान तुम्हाराही सच्चा है और सब कहनेकी बातें हैं।

रानी—बाबाजी, वह दोहा फिर पढ़ो, बड़ा अच्छा और सच्चा दोहा है। अपना मान मैं कभी न छोड़ूंगी।

आसा—(दोहा पढ़कर) बाईजी! राजाओंमें सच्चा मानी दुर्योधन हुआ उसी कुलमें आप हैं। रानियोंमें सच्चे मान गुमानवाली आपही हैं।

रानी—बाबाजी! दुर्योधन नामका तो एक ही राजा हुआ, पर अभागी उमाके नामकी तो कई रानियां हुईं। उनमें एकके नामका यह दोहा प्रसिद्ध है—

हार दियो छन्दो कियो, मूक्यो मान मरम्म।
ऊमा पीव न चक्खियो, आडो लेख करम्म॥

अर्थात् हार दिया, छिपाया, मान छोड़ा; फिर भी उमाको

पतिका सुख न मिला, उसके भाग्यकी लकीर आड़ी पड़ गई।

आसा—बाईजी! वह तो उमा सांखिली(१) थी और तुम उमा भट्टानी हो, दोनोका घराना भी एक नहीं।

रानी—(रोकर) बाबाजी दोहेमें तो केवल उमा है सांखलेने और भट्टानीको कौन जाने।

आसा—क्यों नहीं जाने, यह दोहा अचलदास खेचींकी वार्त्ता का है, उमादे सांखेली उसकी रानी थी, उसे सब जानते हैं क्या तुम नहीं जानतीं?

रानी—मेरे और तुम्हारे जाननेसे क्या होता है, दोहेमें तो जाति नहीं लिखी है, मेरे और तुम्हारे पीछे कौन जानेगा?

आसा—तुम्हारे पीछे तक जीता रहा तो तुम्हारे नामको अमर कर दूंगा।

रानी—आप न आते तो न जाने क्या होता। आपके भतीजे की बात पर धोखा खाकर मैं अपनी मर्यादा छोड़ देती तो सौतें मुझ पर हंसतीं और कहतीं कि बस इतनाही पानी था।

इतनेमें अर्ज हुई कि ईश्वरदास हाजिर है, यह सुनकर आसा चला गया। ईश्वरने आकर कहा—बाईजी! यह आपने क्या

(१) उमादे सांखेली गागरोनके खेची राजा अचलदासकी रानी थी। उसकी सौत सोढ़ी रानी राजाके ऐसी मुंह लगी थी कि राजा उसके भयसे सांखेलीके पास नहीं जाता था। जब इस प्रकार बहुत वर्ष बीत गये तो एक दिन सोढ़ी रानीने सांखेलीके पास एक बहुमूल्य हार देखकर एक रातके लिये मांगा। उसने हार इस प्रतिज्ञा पर दिया कि वह राजाको एक रात उसके पास आने दे। सोढ़ी रानीने यह स्वीकार किया पर राजाको समझा दिया कि जाना पर चुपचाप रात बिताकर चले आना। राजाने वैसाही किया। सवेरे सांखेली रानीने दुःखके साथ ऊपर लिखा दोहा पढ़ा। राजस्थानके लोग इसे निराशाके समय पढ़ा करते हैं।

किया; चलती सवारी राहमें ठहराली ? रावजी आपकी बाट देख रहे हैं। कुमार रामसिंह, रायमल, उदयसिंह और चन्द्रसेन आदि स्वागतको तय्यार हैं। नगर भरमें आनन्द फैल रहा है कि रूठी रानी आती हैं और रावजी उन्हें किला सौंपकर लड़ने जाते हैं।

रानी—तुम रावजीको लिख भेजो कि मैं तो यहांही रहूंगी यहांका जो प्रबन्ध करना हो वह मेरे जिम्मे करें और हर्षपूर्वक लड़नेको जावें। राजपूतोंको शत्रुओंसे लड़नेमें देर न करना चाहिये।

ईश्वर—अंधेर करती हो, यहां रहकर क्या करोगी ? रावजी ने अपने परायै सबसे शत्रुता कर रक्खी है, घर फूट रहा है। वीरम-देव मेड़तिया और मारवाड़के दूसरे भूमिये और जागीरदार जिन-की भूमि रावजीने छीन ली है शेरशाहके पास पुकारने गये हैं, फिर एक ओरसे शेरशाह और दूसरी ओरसे हुमायूंके आनेकी खबरें उड़ रही हैं आप जोधपुर चलकर किलेका प्रबन्ध कीजिये।

रानी—बादशाह आते हैं तो आने दो, मुझे उनका क्या डर पड़ा है, मैंने तुमसे जो बात अजमेरमें कही थी वही यहां कहती हूं। रावजी यदि कोई काम मेरे अधिकारमें कर देंगे और अपने पासकी सेनामेंसे आधी भी यहां भेज देंगे तो मैं यहां बैठी बैठी भी जोधपुरकी रक्षा कर लूंगी। रावजी जहां चाहें जायं, मैं अब जोध-पुर नहीं जाऊंगी। हां यदि रावजी आज्ञा दें तो रामसरमें जा रहूं।

ईश्वरदासका मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ। उसने जोधपुर जाकर रावजीसे कहा कि मैंने तो बाईजीको प्रसन्न कर लिया था, आसाजी ने कढ़ी बिगाड़ दी, किये कराये पर एक दम पानी फेर दिया, आपने उसे भेजा क्यों ? रानी उमादेको आप जानते हैं। आसा जीने मानका शब्द उन्हें फिर याद दिला दिया और वह मचल गई और कोसानेमें डेरे कर दिये। मैंने बहुत समझाया पर उन्होंने एक न सुनी। किसीने पागलसे पूछा—क्यों गांव जलाया ? उसने

कहा खूब याद दिलाया, अब जलाता हूं।

रावजी—फिर अब क्या करना चाहिये, किसे भेजूं?

ईश्वर—मुझे तो ऐसा कोई नहीं दिखता जो जाकर उन्हें मना लावे, और वह भी आसाजीके होते।

रावजी—आसाजी तो मुझसे घर जानेको छुट्टी लेकर गये थे?

ईश्वर—बस इसीमें कुछ चाल हुई।

रावजी—चाल कैसी?

ईश्वर—विशेष कुछ नहीं (कहते कहते रुक गया क्योंकि आप भी रिशवत हजम किये बैठा था)

रावजी—तब क्या करना चाहिये?

ईश्वर—अभी तो आसाजीको हुक्म होना चाहिये कि वहांसे चले जायं, फिर मैं बाईजीको लेआऊंगा।

इतनेमें हुमायूं सिन्धसे मारवाड़में आया और आगरेसे शेरशाह के वकील यह पैगाम लेकर पहुंचे कि हुमायूंको पकड़ना, जाने न देना। इसके बदलेमें गुजरात फतेह करके तुम्हें दिया जायगा। यह सुन रावजी दुविधामें पड़ गये। यह खबर हुमायूँने भी सुनी, वह ऊपर ऊपर लौट गया। उसके साथियोंने मारवाड़में गोवध किया था, रावजीने इस अपराधका दण्ड देने और शेरशाहकी दृष्टिमें भला बननेके लिये कुछ फौज हुमायूंके पीछे भेजी, पर वह बचकर निकल गया।

राजपूतोंकी वीरता।

शेरशाह हुमायूंके बचकर निकल जानेकी बात सुनकर रावजीसे बिगड़ा उसने मारवाड़पर चढ़ाई कर दी। रावजी अजमेर जानेको तो पहलेसे ही तैयार थे, अब मेड़तेका रास्ता छोड़कर जैतारनके रास्ते चले। जोधपुरके हाकिमने रावजीकी आज्ञासे

कोसानेमें आकर रूठी रानीको सवारीका अधिकार मेड़तेके हाकिमसे लेलिया। मेड़तेके हाकिम और आसाजी दोनोंने रूठीरानीको सरकारसे खिलअत पायी, हाकिम मेड़तेको गया और आसाजी जेसलमेरको। आसाजीसे रावजीने जोधपुरके हाकिम द्वारा कहला दिया था कि अब तुम हमारे राज्यमें न रहो।

जब रावजी अजमेर पहुंचे तो शेरशाहने सुना कि उनके पास ८० हजार सेना है वह सन्नाटेमें आगया। बीरमजी (१) मेड़तियेने कहा कि आप चलें तो सही, मैं रावजीको जरा देरमें भगा सकता हूं। शेरको इसका विश्वास न हुआ, वह फूंक फूंककर पांव रखता हुआ चला जब अजमेर बहुत पास रह गया तो उसने बीरमजीसे कहा कि अब अपनी चतुराई दिखाइये। बीरमने राव मालदेवके सरदारोंके नाम फारसीमें फर्मान लिखाया, "हम तुम्हारे बुलानेसे आगये हैं अब तुम अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार रावजीको पकड़कर लेआओ तुम्हारे खर्चके लिये फीरोजियां(२) भेजी जाती हैं।" फिर एक एक फर्मान ढालकी गद्दीमें रखकर सी दिया। जिस ढालमें जिस सरदारके नामका फर्मान था वह उसीके पास बेचनेको भेजी और बेचनेवालेसे कह दिया कि वह जिस दाममें ले देआना। फिर कई लाख फीरोजियां शेरशाही खजानेसे लेकर कुछ तो आप रखलीं और बाकी अपने आदमियोंके हाथ रावजीके उर्दूबाजारमें भेजकर सस्ते दामपर बिकवा दीं। इसी प्रकार ढालें भी रावजीके सरदारोंने लड़ाईको जरूरतसे महंगी सस्ती सब खरीद लीं।

यह काररवाई करके रातको बीरमजी रावजीके पास गया और कहने लगा कि आपने मेड़ता मुझसे छीन लिया और बीकानेरके

---

(१) यह मेड़तेका राव था, राव मालदेवने इसे मेड़तेसे निकाल दिया था। चित्तोड़का प्रसिद्ध वीर जयमल राठौड़ इसीका पुत्र था।

(२) फीरोजशाही सिक्का जो उस समय भी चलता था।

राव जेत्सीको मारडाला, इससे यदि हम बादशाहसे मिलें तो मिल सकते हैं, पर आपके और सरदार उससे क्यों मिल गये हैं, उन्होंने रिश्वंतमें खूब फ़ीरोजियां ली हैं।

रावजी—बाबाजी(१) मुझे तो कुछ खबर नहीं, इसका कुछ सबूत है ?

बीरम—अपने सरदारोंकी ढालें देखिये उनकी गद्दियोंमें बादशाही फर्मान हैं और लाखों फीरोजियां आई हैं। क्या बाजारमें न बिकी होंगी ?

बीरम यह कहकर चल दिया पर रावजी बड़े फेरमें पड़े। आदमी भेजकर फीरोजियोंका हाल पूछा तो सब सर्राफ़ों के पास निकलीं। उनसे पूछा तो कहा कि अपनेही आदमी बेच गये हैं। इससे रावजीको अपने सरदारों पर पूरा सन्देह होगया। दूसरे दिन जब सब सरदार मुजरेको आये तो रावजीने उनके पास नई नई ढालें देखकर पूछा, यह कहांसे आई ? उत्तर मिला कि व्यापारियोंसे खरीदी गई हैं।

रावजीने देखनेके बहानेसे सब ढालें रखलीं। दरबार उठ जाने पर उनकी गद्दियोंकी चिरवाकर देखा तो वही फर्मान मिले जिन की बात बीरमने कही थी। मुन्शीको बुलाकर पढ़वाया तो वही लेख निकला। रावजीको विश्वास होगया कि सब सरदार रिश्वत लेकर बादशाहसे मिल गये हैं, मेरे साथ दगा करेंगे। रामसे मिल जानेका सन्देह तो पहले ही था, अब यकीन होगया कि सरदारों की नीयत खराब है। उसीदम कूचकी आज्ञा दी, सब चकित रहगये। सरदारोंने विनय की, कि हम बादशाहसे कभी नहीं मिले, हमारे साथ जालसाजी हुई है, पर रावजीको विश्वास न हुआ।

बादशाहने बीरमकी काररवाईसे साहस पाकर रावजीका पीछा

(१) बीरमजी सम्बन्धमें रावजीके दादा होतेथे और जयमलके चचा।

किया। जब रावजी बावरा जिला जैतारनके पास सुमिल नदीसे उतरे, तो उनके सूर्मा सरदार जेता और कूंपाने विनय की, कि यहां तक जो भूमि आप पीछे छोड़ आये हैं वह आपकी जीती हुई थी, अब आगे हमारे बड़ों (१) की जीती हुई है। हम ऐसे कुपूत नहीं हैं जो अपनी भूमिको यों ही छोड़कर चले जायं। आप जाते हैं, खुशीसे जायं, हम तो शेरशाहसे यहीं जम कर लड़ेंगे वह भी तो देखे कि राजपूत भूमिके लिये कैसे प्राण देते हैं।

रावजीने कहा यहां लड़ना व्यर्थ है, जोधपुर चलकर लड़ेंगे। पर जेता कूंपाने न माना वह दस हजार बीर राठौड़ोंको लेकर पलट कर बादशाहको सेना पर पिलच पड़े, ऐसे लड़े कि बादशाहको अपने मारे जानेका भय होगया। पर उसकी सेना चालीस पचास हजार थी और यह कुल दस हजार। कहां तक लड़ते अन्तको मारे गये, अपनी बीरताका सिक्का बादशाहके दिला पर जमा गये। शेरशाहने खुदा खुदा करके विजय पाई। शुक्र करते हुए कहा, बड़ी खैर हुई, नहीं तो मुट्ठी भर बाजरीके लिये हिन्दुस्तानकी सलतनतही खोई थी।

दूसरे दिन इस समाचारको सुनकर रावजीने सिवानेकी ओर बाग मोड़ी। जोधपुरके किलेदार को लिखा कि किलेका बन्दोबस्त रखो और रानियोंको हमारे पास भेज दो, यही बात रूठीरानीसे कहला दो। किलेदारने आज्ञा पातेही सब रानियोंको सिवाने भेज दिया जो जोधपुरसे ३० कोस पश्चिमी मरुस्थलमें है और स्वयं किला सजाकर लड़ने मरनेको तैयार हो बैठा। जो राठौड़ रावजीके अविश्वाससे अप्रसन्न होकर फिर आये और जो जेता कूंपाके मारे जाने पर बच रहे वह सब मिल कर कोसानेमें रूठीरानीके पास एकत्र होगये।

शेरशाह स्वयं तो नहीं आया पर उसने पांच हजार सवारोंके

(१) जेता और कूंपाभी बीरमकी भांति रावजीके खान्दानके थे।

पहुंच गये और जोधपुरमें फिरसे राठौड़ोंका राज्य होगया। साथ ही कुछ घरेलू झगड़े भी उठे, जिनकी नींव रावजीने झालीरानी स्वरूपदेके प्रेमसे स्वयं डाली। रावजीका बड़ा बेटा राम रानी लाछलदे कछवाहीसे उत्पन्न हुआ था और रूठीरानीके पास अधिक रहा करता था। उससे छोटा रायमल झाली हीरांदेसे उत्पन्न हुआ था। उदयसिंह और चन्द्रसेन रानी स्वरूपदेसे हुए थे। हीरांदे और स्वरूपदे चचेरी बहने थीं वह अपने पुत्रोंके लाभके लिये आपस में साजिश करके रावजीको रामकी ओरसे बहकाती रहती थीं। राम भी रावजीको खिंचा देखकर खिन्नसा रहता था। रावजीके साथी भी रावजीके शासनकी कमजोरी देखकर रामको रावजीके विरुद्ध भड़काते रहते थे। मारवाड़के अमीर घरोंमें पुरुषोंके लिये दाढ़ी छटाने और स्त्रियोंके लिये हाथी दांतका चूड़ा पहननेके दो अवसर बड़ी खुशीके होते हैं। इन अवसरों पर खूब आनन्दोत्सव किये जाते हैं राम संवत् १६०४ में १६ वर्षका होगया, उसके थोड़ी थोड़ी दाढ़ी मूछें भी निकलआई। दाढ़ी जबतक ठोड़ीके ऊपर बीचमेंसे नहीं छटाई जाती तबतक हिन्दू मुसलमानोंमें कुछ भेद नहीं समझा जाता। मानो यह पहचान हिन्दू मुसलमानकी दाढ़ीकी है। लाछलदेने अपने पुत्र रामकी दाढ़ी छटानेका सामान करके रावजीसे उत्सवके लिये आज्ञा मागी। उन्होंने आज्ञा दी। जोधपुरमें जल कम है, इससे राम उत्सव करनेके लिये मण्डोर (१) के हरे भरे बागोंमें चला गया और उत्सवके बहाने वहीं पर अपने मित्रों और विश्वासी लोगोंको एकत्र करके बोला कि रावजी बूढ़े होगये हैं, उन्होंने बहुतसे शत्रु उत्पन्न कर लिये हैं, देशमें झगड़ा फैला रखा है आज यहांसे चलतेही उन्हें पकड़ लो और कैद करदो जिससे सबको सुख होजाय। यहां यह सलाह होती

(१) मण्डोर मारवाड़की पुरनी राजधानी है जोधपुरसे तीन कोस उत्तर एकपहाड़ीके नीचे बसा है।

होरही वहां रावजीको भी इसकी खबर लग गई। उन्होंने झटपट कछवाही रानी लाछदे की ड्योढ़ी पर पालकी भेजकर कहलाया कि अभी किलेसे नीचे आजाओ। रानीने पूछा, मेरा दोष? उत्तर मिला कि तेरा बेटा तुझसे कहेगा। रानीको उसीदम क़िला छोड़ना पड़ा! सन्ध्याको रामभी नगरमें घूमता आकर किलेमें जाने लगा तो किलेदारने कहा, भीतर जानेका हुक्म नहीं है। रामके कहनेसे किलेदारने रावजीसे जाकर कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि राम कुपुत्र है किलेमें रहनेके योग्य नहीं। वह गोन्दोज चला जाय वहीं उसके लिये सब प्रबन्ध होजायगा। राम अपनी माँ सहित गोन्दोज चला गया, इस तरह यह काम झाली रानियोंकी इच्छानुसार होगया। तब वह रूठी रानीको हटानेकी चेष्टा करनेलगीं। कहती थीं कि यह सिल अभी छाती परसे नहीं सरकी, पहले ६० कोस पर थी अब १५ कोसपर है। झाली रानियोंने स्वयं भी रावजीसे कहा और दूसरोंसे भी कहलाया कि रूठीरानीके कारणही राम ऐसा उद्धत और अशिष्ट होगया है। रावजीने रूठीरानीको भी गोन्दोज भेज दिया। रूठी रानीने कुछ तो राम पर स्नेह रखनेसे कुछ रावजीके आदरके लिये और कुछ अपने स्वाधीन स्वभावके अनुकूल देखकर यह हुक्म मान लिया और गोन्दोज चली गई, उसकी सौतोंके घर उस दिन घीके दिये जले।

गोन्दोजमें अपना निर्वाह न देखकर राम उदयपुर चला गया। क्योंकि राना उदयसिंहकी पुत्रीसे उसका विवाह हुआ था। रानाने उसका बहुत आदर किया और केलोह ग्राममें उसके रहनेको स्थान दिया जो मारवाड़से निकट पड़ता है। राम अपनी सगी माता और सौतेली मा रूठीरानीको भी वहीं लेगया। झाली रानियोंकी आंखोंका कांटा यों निकल गया, रावजीभी बाहर भीतर के शत्रुओंसे बेखटके होकर फिर देश विजय करनेमें लग गये और बहुतसे अपने खोये हुए इलाके फिर जीत लिये, कई नये इलाके

भी फतेह किये, पर जल्दही विजयकी धारा रुक गई। अकबरके बादशाह होने और जोर पकड़नेसे रावजीको अपनीही पगड़ी सम्हालना कठिन होगया, धीरेधीरे कितनेही परगने मुगलोंके अधिकारमें चले गये। इसी दशामें कार्त्तिक सुदी द्वादशी संवत् १६१९ धारे राव मालदेवका देहान्त होगया।

रूठीरानीका सती होना।

रानियां सती होनेकी तय्यारी करने लगीं। झाला रानीको उसके बेटे चन्द्रसेनने सती होनेसे रोक लिया और कहा कि दो चार दिनमें सब सरदार बाहरसे आजायंगे उनसे मेरी सहायता करनेका वचन लेकर सती होना। झालीरानीने चन्द्रसेनको उदयसिंहसे छोटा होने पर रावजीसे कह सुनकर युवराज बना दिया था। झालीरानी हीरादेने भी उससे चन्द्रसेनकी सिफारिश की, इस लिये स्वरूपदे ठहर गई, उसी समय सती न हुई। दूसरी रानियां, पातरें और खवासें रावजीके साथ सती होगईं जो गिनतीमें २१ थीं।

रावजीके मरनेकी खबर बहुत जल्द सारे देशमें फैल गई, उनके बड़े बड़े सरदार अपने अपने सिर मुंड़ाकर जोधपुरमें आने लगे। झालीरानी स्वरूपदेने रावजीके मरनेके पांचवें दिन चन्द्रसेनको सरदारोंका वचन तो दिला दिया पर इस झमेलेमें देर होजानेसे उसने चन्द्रसेनसे कहा कि तूने अपने राज्यके लिये मुझे रावजीके साथ जानेसे रोक लिया इसलिये इस राज्यसे तू कुछ लाभ न उठावेगा और न तेरी सन्तान। यह कहकर उसने चिता बनवाई और रावजीको पगड़ीके साथ सती होगई।

दूसरी पगड़ी(१) कार्त्तिक सुदी पूर्णिमाको केलोहमें पहुंची। उसे

(१) जब कोई राजा मर जाता था तो नाजिर उसकी पगड़ी लेकर जनानेमें जाता था। सती होनेवाली रानी उस पगड़ीको

देख रूठीरानीने आपसे आप मान छोड़ दिया, उसका सारा बल निकल गया। कहने लगी—अब किससे रूठूंगी, जिससे रूठी थी—वही अब नहीं रहा तो जीकर भी क्या करूंगी। भगवानने मेरा मान सुधार दिया! जल्द चिता तय्यार करो मैं भी रावजी का साथ न छोड़ूंगी। उधर लाछलदे भी सती होनेकी तय्यारी करने लगी पर उसका पुत्र राम राज्य लेनेके लिये माताओंके सती होने तक न ठहरा, उदयपुर चल दिया। माताने उसे श्राप दिया कि राम! तेरे लिये हमें जोधपुर छोड़कर यहां दिन काटने पड़े और तू हमें छोड़कर जाता है इससे तू और तेरी सन्तान कभी मारवाड़का राज्य न करेगी सदा बाहर रहेगी। १

चिता तय्यार होते होते यह खबर दूर तक फैल गई कि रूठीरानी भी पतिके पीछे सती होती है। चारचार, पांचपांच कोससे लोग सतीके दर्शन करने दौड़े। सब हाथ जोड़कर कहते थे—सती माता! तू धन्य है। सची सती इस कलियुगमें तूही है। धन्य है तू और तेरे मातापिता। यह मेवाड़ देश भी धन्य है जिसे तू सती होकर पवित्र करती है। लाछलदे! तू भी धन्य है!

चिता तय्यार होगई, बाजे बजने लगे। दोनो सतियां घोड़ों पर चढ़कर बाजारोंसे निकलीं, रुपये और गहने लुटाती जाती थीं। चिता पर पहुंचकर दोनो आमने सामने बैठीं और पतिकी पगड़ी बीचमें रखली। पर लांपा अर्थात् आग देनेवाला कोई नहीं था, सब लोग चुप खड़े देख रहे थे। रूठीरानीका चेहरा चांदसा चमक रहा था, पर अचानक रामकी कुपात्रता याद आकर लाल होगया। उसके दग्ध हृदयसे फूलसी कोमल जिह्वाको झुलसाते हुए यह वचन निकले—"मैं तो अपने पतिसे रूठकर आई सो आई पर दूसरीकोई

लेलेती थी दूसरी रानियां भी उसीके साथ सती होजाती थीं। जो रानी कहीं दूर होती थी एक पगड़ी उसके पास भी भेज दीजाती थी।

खोजाई इस प्रकार सौतके पुत्रके साथ न आवे।" लाछलदे उसका यह नृसिंह रूप देखकर डरी कि कहीं उसके पुत्रको कोई कड़ा श्राप न दे दे। उसने रूठीरानीको और बोलने न दिया और कहने लगी—बाईजी! उस कुपूतने सगी माकी ओर भी ध्यान न दिया, पर जरा ठहर जाता तो हमें पतिके पास जानेमें इतना विलम्ब न होता, आग देदेता तब चला जाता।

पतिका प्यारा नाम सुनकर उमादेको जोश आगया पतिकी प्रीति उस पर छागई। उस समय उसकी दृष्टि जिस पर पड़ती थी वही मत्त होजाता था। किसीने क्या अच्छा कहा है—

नैन छके बैना छके, छके अधर मुसक्याय।
छकी दृष्टि जापर पड़े, रोम रोम छक जाय॥

फिर रूठीरानीने जरा सम्हलकर कहा—देखो, यहां कोई राठौड़ तो नहीं है? जैत मालौत नामका एक कंगाल राठौड़ मिला। वह डरता डरता आया और हाथ जोड़कर बोला—सती माता! मुझपर दया करो। मैं तो भूखा मरता मारवाड़ छोड़ कर यहां मेवाड़में पेट पालता हूं। उमादेने कहा—ठाकरां डरो मत, स्नान करके चितामें आग देदो, तुम राठौड़ हो इस लिये तुम्हें बुलाया है। उसने कहा—सती माता! आग तो मैं दूंगा, पर साथलवाड़ा(१) डालकर बारह दिन तक कहां बैठूंगा मेरा तो घर भी इतना बड़ा नहीं कि जोधपुरकी रानीको दाह करके उसमें शोककी जाजम बिछाकर बैठूंगा। उमादेने यह सुनकर मुंशीको इशारा किया, उसने उसी दम रानाजीके नाम सतियोंकी ओरसे चिट्ठी लिखी कि राम हमें सती किये बिनाही चला गया। आप यह केलोह गांव उससे छीनकर जैत मालौत राठौड़को देदें। इस तरह सतीने दस हजारकी पैदावारका गांव उस कंगाल राठौड़को दिला दिया।

(१) शोकके लिये जाजम बिछाकर बैठना।

जीत मालोतने चिट्ठी लेकर कुछ देर न की भद्र होकर स्नान किया और चितामें आग देदी। इस प्रकार विवाह होनेके २७ वर्ष बाद उमादेका रूठना और मान उसके साथही समाप्त हुआ, चारों ओरसे धन्य धन्य की ध्वनि होने लगी।

उमाके सती होनेकी खबर जब जोधपुर पहुंची तो सब उसे सराह कर कहने लगे कि भाटी वंश धन्य है जिसमें ऐसी राजकुमारियां उत्पन्न होती हैं। पतिसे रूठने पर भी जिनके पातिव्रतमें कोई फरक नहीं पड़ता। रावजीको मरे बारह दिन होने पर जीत मालोतके लिये जोधपुरसे पगड़ी आई उसने क्रिया कर्म समाप्त करके पगड़ी बान्धी, फिर उदयपुर जाकर वह चिट्ठी राना उदयसिंहको दी। उन्होंने चिट्ठी पढ़कर सिर पर रखी और केलोह का पट्टा उसके नाम लिख दिया। उसने लौटकर गांव पर अपना अधिकार कर लिया और जहां रूठीरानी सती हुई थी वहां एक पक्की छतरी बनवा दी जिसका चिन्ह अब तक बना हुआ है।

रूठीरानीकी कृपासे जिस प्रकार जीत मालोतको केलोह गांव मिला उसी प्रकार उसका शाप खाली न गया, रामको जोधपुरका राज्य न मिला। उदयसिंह और अकबरकी चेष्टा भी उसे राज्य दिलानेमें निष्फल हुई और वह बिना राज्य पायेही दुःखित होकर मरा। उसके पोते केशवदासको जो अकबर और जहांगीर के इतिहासमें केशव मारूके नाम से प्रसिद्ध है मालवेमें एक छोटी सी जागीर अमझेरा मिली थी जो सन् १८५७ ई० के गदरमें जब्त होगई।

झाली रानी स्वरूपदेका शाप भी खाली न गया। चन्द्रसेन उस समय तो जोधपुरका राव होगया था पीछे अकबरने राव मालदेव का मरना सुन कर मारवाड़ पर फौजें भेजीं। राम, रायमल और उदयसिंह बादशाहकी सेनासे जा मिले। फल यह हुआ कि चन्द्रसेनने संवत १६२२ में जोधपुर खाली कर दिया जिसे अकबरने १८ वर्ष अपने अधिकारमें रखकर संवत्

१६४०में उदयसिंहके हवालेकिया। उसके वंशके अबतक जोधपुरको राज्यकरते हैं। चन्द्रसेनके पोते कर्मसेनको जहांगीरने अजमेर जिले में भिनाय का परगना दिया था, उसकी औलाद वहां है। इस प्रकार रूठीरानीकी कहानी पूरी हुई। वह नहीं है उसका नाम आज साढ़े तीन सौ साल बीत जाने पर भी बना हुआ है।

कवीश्वरोंने सती उमादेकी प्रशंसामें जो कविता लिखी है और गीत बनाये हैं वह ऐसे प्रभावशाली हैं कि उनके पढ़नेसे अब भी हृदय उमड़ आता है। इस समय सती होनेकी रीति नहीं है तोभी उस कविताको पढ़कर उस समयका चित्र आंखोंके सामने खिंच जाता है। आसाजी बारहट जिसने एक दोहा पढ़कर उमा को सदाके लिये पतिके पास जानेसे रोक दिया था उस समय कोटरा गांवमें बाघा और भारेली के पास था। जब उसने रूठी-रानीके सती होनेकी बात सुनी तो कहा कि धन्य उमा! धन्य, आज तेरा मान सच्चा हुआ। उसने उसी समय १४ छप्पय बनाये और जगह जगह लिखकर प्रसिद्ध कर दिये क्योंकि उसने उमाके नाम और मानको अमर कर देनेकी प्रतिज्ञा की थी। वह छप्पय इस प्रकार हैं—

छप्पय।

गिरां सिरे गोरहर(१)—चन्दजस(२) नामी चाड़ण।
मेदपाट चीतोड़—भलो जोधाण भवाड़ण।
नव(३) सहसी छत्र पड़े—वड़ए(४) सागर लीलावर(५)।
आई कालाखरी(६)—मुवो राजेद मण्डोवर(७)।
सांभले(८) बात उमा सती—जादव आंगमियो(९) जलण।
मोलियो(१०) गहे राव मालरो—बांध कण्ठ ऊठी बलण॥

(१) पहाड़का नाम जिस पर जैसलमेरका किला है (२) अमर नाम करना (३) नौहजार गांवोंवाला (४) बड़प्पन (५) महावीर या महादानी (६) सत्यकी पत्नी (७) मण्डोर (८) सुनकर (९) अङ्गी-कार किया (१०) चौरा जो राजाओंके मरनेकी खबर देनेके लिये रनवासमें रानियोंके पास भेजा जाता है।

अर्थ—पहाड़ोंमें सिरे (उत्तम) गोरहर है जो यशको अमर करनेवालाहै और मेवाड़ चित्तौड़ तथा जोधपुरको खूब भरमानेवाला है। नौ हजार गांवोंका छत्र बड़प्पनका समुद्र अच्छी लीलावाला, काल पत्रौं आई कि, मण्डोरका राजराजेन्द्र मर गया! यह बात सुनकर जादव जातिकी सती उमा ने जलना अंगीकार किया और राव मालदेवका चोरा लेकर गलेसे बांध लिया और जलनेको उठी।

रोपे काठ सुगन्ध—अगर चन्दण मलियागर।
परमल धूप कपूर—घिरत सींचे वैसनर(१)।
मिले कोड़ तेंतीस—सूर उचिस्रव साहे(२)।
करन बात परिख्यातं—माल राजा पड़ गाहे(३)।
शशिबिंब जेम ऊमां सती—कमल(४) बसे सोलह कला।
गंगेव राव रावल करन—आज करे बिहूं(५) ऊजला।

अर्थ—सुगन्धित काष्ठ अगर चन्दन मलयागिरिको रोपकर, धूप कपूरकी सुगन्धके साथ आगमें घी सींचा। ३३ करोड़ देवताओंसे मिलकर सूर्य्यने उच्चैःश्रवा नामक अपने घोड़ेको रोका राजा मालदेवके मरनेकी बात विख्यात करनेको। चन्द्रबिंब जैसी उमा सती जिसके मस्तकमें १६ कला बसती है गंगाके बेटे (मालदेव) और रावल करण (अपने पिता) दोनोको उज्वल करती है। २

जिकण(६) लाज हम्मीर—मुवो जूझे रिणथम्भर(७)।
जिकण लाज पातल—मुवो पावागढ़ ऊपर।
जिकण लाज चूंडरज—मुवो नागोर तणे सिर।
कान्हड़ दे जालोर—अने दूदो जैसलगिर।
बड़घरां लाज राखण बड़ी—करन सिधू(८) खत्रवट(८)करे।
सो लाज काज ऊमां सती—मालराज कारण मरे।

अर्थ—जिस लाजसे हम्मीर चौहान लड़कर रणथम्भोर पर मरा,

(१) अग्नि (२) रोका (३) मरा (४) मस्तक (५) दोनो
(६) जिस (७) लड़वार (८) बेटी (८) क्षत्रियपन।

जिस लाजसे पातल (प्रताप) पावागढ़ पर काम आया, जिस लाजसे चूंडा (राठौड़) नागौर पर मरा, कान्हड़देव (चौहान) जालोर पर और दूंदा भाटी जैसलमेर पर मरा, बड़े घरोंकी बड़ी लाज रखनेके लिये करन (लवनकरण) की बेटी साहस करती है. उसी लाजके काज उमा सती मालराज (मालदेव)के साथ मरती है।

मरणे भय बीकम्म—खत्री तज वायस खद्धो ।
मरणे भय रावणह—जीवरव किरणां बद्धो ।
मरणे भय जल पैस—माण दुर्योधन मुक्के१ ।
मरणे भय पण्डवां—कोट हतणापुर चुके ।
विकराल झाल हुय वय वसण२—वलेमाल३ बैकुण्ठ वरण ।
सामरे४ काम उमा सती—मेडिचीय५ रचियो मरण ।

अर्थ—मरनेके डरसे बीकमने क्षत्रियपना छोड़कर काव्वा खाया था, मरनेके डरसे रावणने अपने प्राणोंको सूर्यकी किरणोंसे बांधा था, मरनेके डरसे दुर्योधनने मान छोड़ दिया था, मरनेके डरसे पांडव हस्तिनापुरका गढ़ छोड़ गये थे परन्तु विकराल ज्वालामें प्रवेश करके बैकुण्ठमें मालदेवको फिर वरनेके लिये जैसलमेरवाली उमा सतीने स्वामीके वास्ते मरना रचा।

मन्दोदर मेलियोराण६—हे कल्लो७ रावण ।
कुन्ती पांडु नरिंद रही—बोलायट८ विचक्षण ।
कान्ह मरण गोपियां—करगह९ अभो नह दीधो ।
कौसल्या दसरत्थ—काठ चढ़ साथ न कीधो ।
पांतरी१० इती सह११बड़ी परब—सनमुख झालां कुण१२सहै ।
पातरू१३ केम१४ मोटी परब—कथन एम१५ उमा कहै ।

अर्थ—मन्दोदरीने रावण राजाको अकेला भेजा, कुन्ती विच-

१ छोड़ा २ बदनको बसाने (प्रवेश करनेके) लिये ३ फिर ४स्वामी ५ माड देश अर्थात् जैसलमेरवाली ६ राजा ७ अकेला ८ डबोकर ९ हाथ १० चूकीं ११ सब १२ कौन १३ चूकूं १४ कैसे १५ ऐसे।

चणाने भी पाण्डु राजाको डबो दिया, कृष्णको मरते हुए गोपियों ने हाथका सहारा नहीं दिया, कौसल्याने चिता पर चढ़कर दशरथ का साथ न किया ; इतनी सब बड़े पर्वको चूक गईं कि सन्मुख भूलोंको कौन सहे मैं कैसे ऐसे बड़े पर्वको चूकूं इस तरह उमा कहती है।

गरुड़ चढ़ो गोविन्द—सांड चढ़ आयो संकर।
ईन्द्र चढ़ो इणवार—पीठ एरावत सहर।
हंस चढ़ो सुर जरठ—चढ़ी देवी सिंहवाहण।
चढ़ो सूर सपतास—चढ़ी अपछरा विमाणण।
सांपड़े सूर सुख साम्हो—भूजवड़े की धांधड़े।
सुर इता आज आयो सती—चढ़ आंजस काठां चढ़े।

अर्थ—गोविन्द गरुड पर चढ़ो, शंकर बैल पर चढ़कर आयो, इन्द्र अब प्रवल ऐरावत (हाथी) की पीठ पर चढ़ो, ब्रह्मा हंस पर चढ़ो, देवी अपने वाहन सिंह पर चढ़ो, सूर्य्य सप्ताश्व घोड़े पर चढ़ो अप्सरा विमानों पर चढ़ो—आज इतने देवता आये (क्योंकि) स्नान करके सूर्य्यके सन्मुख ध्रुवके बराबर अभिमान चढ़ी हुई सती चिता पर चढ़ती है।

सझ सोले सिणगार—सतव्रत अंग अंग साहे१।
अरकवार(२) मुख अग—नीर गंगाजल नाहे।
चोर पहर अस चढ़े—केश वेणी सिर खुल्ले।
देती परदकखणा—हंसगत राणी हल्ले।
सुर भुवन पेस पहुंता३ सरग—साम तणो मनरंजियो४।
रूसणो मालदेरावस—भटियाणी इम५ भंजियो६।

अर्थ—१६ शृङ्गार करके सतीके व्रतको अंग अंगमें लिये हुए (जिसके) मुखसे (मानो) १२ सूर्य्य उगे हैं गंगाजलसे नहाई चोर

१ पकड़े हुए (२) १२ सूरज ३ पहुंचा हुआ ४ प्रसन्न हुआ ५ इस प्रकार ६ तोड़ा, दूर किया।

पहनकर घोड़े पर चढ़के बाल और चोटी खुली हुई प्रदक्षिणा देती रानी हंसकी चाल चलती सुरभवनमें पहुंची, स्वामीका मन राजी हुआ। भटानीने अपना रूठना इस तरह राव मालदेवसे दूर किया।

हंस गमणी राव रमणी—निर्मल सारंग नैणी।
इमृत बैण सबजाण—बदन चन्दा अहिं बेणी।
पतवरता पदमणी—सील सुन्दर सतवत्ती।
लछण महा लच्छिमी—जिसी गंगा पारवत्ती॥
वड सती माल चाढण बड़म—जीव अंग करती जुवा¶।
झिलती झाल आठूं दिसा—हार कण्ठ जू जू* हुआ।

अर्थ—हंस जैसी चलनेवाली रावमें रमनेवाली मृगकेसे निर्मल नैनवाली, मीठी बोलनेवाली सर्वजान चन्द्रवदनी अहिवेनी पतिव्रता पद्मिनी सुशीला सुन्दर सत्यवती, लक्षणोंमें महालक्ष्मी गंगा और पार्वती जैसी, बड़ी सतीने मालदेवको बड़प्पन चढ़ानेके लिये जीव को अङ्गसे अलग किया, आठों दिशाकी ज्वाला झेलते हुए उसके हार और कण्ठ जुदा जुदा होगये।

सझ सचील सिनान—दान सोव्रन (१) विप्रांदे।
धारे चित निजधर्म—पषां(२) ऊजला करि वे(३)॥
मेट मोह मृतलोक—काठ भखण (४) मझपैसे।
महाझाल मंगाल(५)—मांहिसिंहासण बैसे(६)॥
करकाल(७)दोष निकलंक करण
तवजे (८) तिण (९) वारां (१०) तणो (११)।
सुरभवन पधारे साम सूं
राणी भांगी रूसणो(१२)॥

¶ जुदा अलग * अलग अलग

(१) सोना (२) पक्ष (३) दो (४) आग (५) प्रज्वलित (६) बैठकर (७) शरीर (८) कहते हैं (९) उस (१०) समय (११ के (१२) रूठना

अर्थ—सुख सहित ज्ञान करके ब्राह्मणोंको सोनेका दान देके नीज धर्म्म धारण किया दोनों पक्ष (सुसराल पीहर) उज्वल करनेके लीये संसारका मोह मेटकर अग्निमें घुसी (और) महाज्वाला प्रज्ज-लीत करके उसमें सिर्हों कासा आसन लगाकर शरीरका दोष दूर किया। उस वक्तका (कवि) ऐसा कहता है कि सुरभवनमें पधारकर रानीने अपने स्वामीसें रूठना मिटाया।

भंवर ब्रूहपर जाल—जाल जंघा रंभातर।
कठंण पयोधर कुंभ—राख कीन चड़ अमहर१॥
चंपकली निरमली—भषे झाला दावानल।
बाहांडाल मृणाल—कंठहोमि मानू जल २॥
विधु३ बदन केस कोमल तकां४ दहवि५ जीमह६ सहसफण ७।
वालिया ८सती उमां बिनें ९अधर बिंब दाड़म१० दसण११॥

अर्थ—भंवोंके भंवरे जलाकर जांघोंके रंभातरु (केले) जलाये। हाथीके कुंभस्थल जैसे कठिन कुच जलाकर राख किये। निर्मल योनिको भी दावानलकी ज्वालाने भख ली। कंवलकी डालियां जैसी बांहों और कैलास शिखर जैसे उज्वल कंठोंको होम किया। चन्द्रमासा मुख और वासुकि नाग जैसे कोमल केश जलाये उमा मतीने बिंबाफल जैसे होंठ और अनार जैसे दांतोंको जलाकर भस्म किया।

होम हंस गत चाल—होम सारंगह१२ लोचण।
सुंद होम सरीर—होम सोव्रन्न १३ मह्वाब्रन१४।
कंठ होम कोयल—गात होमे चल१५ गैंवर१६।
ब्रूह होम बिहुं१७ भंवर—चीर होमे पाटंबर॥

---

१ आग २ कैलास जैसे ३ चन्द्र ४ तिनको ५ जलाये ६ जैसे ७ हजार फणवाला वासुकी नाग ८ जलाया ९ दोनों १० अनार ११ दान्त १२ हिरन १३ सोना १४ रंग १५ चाल १६ हाथी १७ दोनों।

बत्तीस लक्षण गुण रूप बहुत[a] त्यारां[b] अंतर दाख[c]तण।
होमतां* विहू§ भेला= हुवा सीलमाण लज्जा सघण॥

अर्थ—हंसगतिचालकी होमकर मृगीकेसे लोचनकी होमा सुन्दर शरीर होमा, सुन्दर महावरण (रंग) होमा। कोयल का सा बोल होमा हाथी जैसा चलनेवाला गात होमा। दोनों भवें भौंरे जैसी होमी, रेशमके चीर भी जलाये। ३२ लक्षण, गुण, अपार रूपको उनके अन्तर कहते होमते हुए ये तीनों (अर्थात्) शील मान और सघन लज्जा भी इकट्ठे होगये थे।

नमे वंदी १ नह कियो—नमे छंदो २ नह कीधो।
नमे नलियो सुहाग—नमे आदर नह लीधो॥
नमे न कीधो नेह—नमि संतोष न पायो।
नमे न लागी पाय—माण एकोज उपायो ३॥
मेलाय ४ नसकियो मालदे जुग सह ५ जीतो पुरुष जिण ६।
तद् ७ सधर ८ माण ऊमां तणो ८ रहीयो जेम १० फणेन्द्रमिण॥

झुककर नमस्कार नहीं किया झुककर अधीनता नहीं की। झुककर सुहाग न लिया और न झुककर आदर लिया झुककर नेह नहीं किया न झुककर संतोष पाया। झुककर पावोंसे न लगी (क्योंकि उसने) एक मान जो संपादन किया था उसको माल देव जैसा पुरुष भी नहीं छुड़ा सका जिसने सब जगतको जीत लिया था। तब ऊमाका प्रबल मान (वासुकि) नागकी मणिकी तरह (ऊंचा) रहा।

माण नेह भंजणो—माण छंदो जड़ तोड़ण।
माण करण बैराग—माण बर नार बिछोड़ण॥

---

[a]बहुत [b]तिनके [c]कहना *होमते हुए §तीनों =एकत्र

१ नमस्कार २ खुशामद, अधीनता ३ पैदा किया, कमाया ४ रखाना, छुड़ाना ५ सब ६ जिसने ७ तब ८ दृढ़, अखंड, प्रबल ८ का १० जैसे।

माण बंध घर गमण—माण सज्जन होय दुर्जन।
माण पेम अवहरण—माण अवधूतां लच्छन॥
सो यही माण उमा सती तैं१ सत राखे माण तण२।
मेले३ न मांण राव मालसूं जली मान जलते जलण।

अर्थ—मान नेहको तोड़नेवाला है मान अधीनताकी जड़ उखाड़नेवाला है। मान बैराग करनेवाला है मान वरवधूको छुड़ाने वाला है मान घर जानेमें बाधा डालनेवाला है मानसे सज्जन दुर्जन होजाते है मान प्रेमका हरनेवाला है मान अवधूतोंका लक्षण है। सो वही मान हे उमा सती तूने ग्रहण किया और उसका सत रखा है। राव मालदेवसे भी उस मानको न छोड़ा और जलते जलते भी अपने मानको लेकर जलगई॥

पेस मज्झ पावक—हुई जमहर नख चख जल।
क्रम चोरासी तणा—करि तण्डल४ भूमण्डल।
होमदहण बिच होत—देह आली दावानल।
धुके धोम धडहड़ण—बात मुख सहंस बलोयल५।
सामहा६ जोड़ उमा सती—देव भाण दिस हाथ दुवे।
मालराव तणी सांभल मरण—होय अङ्गारा राख हुवे॥

अर्थ—अग्निमें प्रवेश करके नखसे शिखा तक जलकर राख हो गई, चौरासी योनिके कर्मोंको भूमण्डलमेंही टुकड़े टुकड़े करके आगमें होमते हुए देहको दावानलमें जला दिया। अग्निसे धड़-धड़ाकर धुआं उठा। हजारों मुखोंसे यह बात चौतरफ फैलगई कि उमा सती सूर्य्यदेवताके सामने दोनो हाथ जोड़कर राव मालदेव का मरना सुनकर अंगारे होकर राख होगई।

———

१ तू २ का ३ छोड़कर रखकर। ४ टुकड़े टुकड़े ५ चारों तरफ ६ सामने

आशाजी बारहटके बनाये हुए छप्पय—

वप१ बांकमर२ बोटियो—तेज झलहल सूरातन।
मन धारण व्रत मुनी—मगा अहंकार सहज मन।
भृकुटी चढ़ व्रूहार—अटल त्रिसलोन उतारे।
आग झाल चख अरुण—निमख नह कोप निवारे।
उबारे बोलईल पर अमर—पतराखि सतजत पणो।
कोजी कोई जमा कली—राणीजाई रूसणो॥

अर्थ—शरीर बांकपनसे घिरा हुआ है सूरापनका तेज मनमें झलक रहा है मनमें मुनिकी वृत्ति (मौन) धारे हुए है मन और स्वभावमें बड़ अहंकार है भृकुटी भौंवों पर चढ़ी है ललाटके अटल ३ सल उतरे हुए नहीं हैं अग्निकी ज्वालाके समान आंखें लाल हो रही हैं क्षणभर भी कोपको दूर नहीं किया है अपने बोल अमर करके पृथ्वी पर पूरे किये हैं और सत जत (जितेन्द्रियपने) की पत रखी है ऐसी उमाकी तरहसे कोई रानीजाई (रानी) रूठनाकरना।

धरा माडि३ धिन धिन—वंस धिन सीम बखाणो।
जात धिनों जादम—सहर धिन धिन जैसाणो४।
धिन पित मात धिनो—जिकां घर देवी जनमिय।
गढ़ धिन धिन गोरहर—राय आंगण उण रमिय॥
धिन धिन उमादे धीवड़ी५—बड़पण सींग बधाड़िया६।
सासरो पीहर मा माण सहु७—तीन पखांनू तारिया॥

अर्थ—माडकी धरती धन्य है चन्द्रवंशको धन्य कहो आदवकी जातिको धन्य है जैसलमेर शहर धन्य है धन्य पिता धन्य माता, जिनके घरमें देवी जन्मी। गढ़ धन्य है गोरहर (पहाड़) धन्य है जिसके राय आंगनमें वह खेली है। उमादे बड़ी बेटी धन्य है धन्य

१ शरीर २ बांकपन ३ जैसलमेरका देश ४ जैसलमेर ५ बेटी ६ बढ़ाया ७ सब

है जिसने बड़प्पनका सींग बढ़ाया सुसराल, पीहर और ननसालके तीनो घरानोंकी तारा।

घुरिया१ ढोल त्रिघाय२—गहरघण घोर नगारां।
अमरइंन्द आणन्द—समर३ हर हर मुख सारां।
व्रेषा पहुप बरसतां—बुही चढ़ बेस विमाणां।
वसि वास बैंकुण्ठ—क्रीत कथ हुई ठिकाणां।
पटाझर४ आप छूटा पटां—सुगन्दरे रूप सगत्तरे५।
मुलकते६ वदन राव मालूसूं—मिलिया महल मुगत्तरे७॥

अर्थ—तीन डंकोंसे ढोल बजे, घनघोर नोबतें बजीं देवताओंमें आनंद हुआ सब मुंहसे हर हर करने लगे फूलोंकी वर्षा होते हुए विमानों पर चढ़कर चली, बैकुण्ठमें जाकर बसी कीर्त्ति की कथा ठौर ठौर हुई, मस्त हाथीके समान खुलेकेशोंसे शक्तिके रूप से मुलकते (हसते) मुंह मुक्तिके महलमें राव मालदेवसे जाकर मिली।

दोहा।

ऊमां सतव्रत आगले—भई सती भटियाण।
उभै दुरंग उजवालिया—जोधाणे जैसाण।*

---

१ बजे २ चोट ३ स्मरण करके ४ मस्त हाथी ५ शक्ति देवी ६ हंसती मुसकुराती ७ मुक्ति।

*यह सब कवित्त बहुत अशुद्ध लिखे हुए मिले थे और जिन चारणोंको जबानी याद थे वह भी अशुद्धही पढ़ते थे इससे इनका शुद्ध करना बड़ा कठिन होरहा था। परन्तु कविराज श्रीमुरारीदानजी बारहट श्रीकृष्णसिंहजी दधिवाडिया करनीदानजी और मोतीदानजी किनयाका अत्यन्त धन्यवाद है कि इन महाशयोंसे इन के शुद्ध करने और अर्थ करनेमें बहीही सहायता मिली है क्योंकि इस डिंगल भाषाके यही विद्वान है।

अर्थ—उमा भट्टानी सतव्रतको आगी लेकर सती हुई (उसने) जोधपुर और जैसलमेरके दोनो कुलोंको उजला किया।

समाप्त।